ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

पवमान

वर्ष : 33 आषाढ़-श्रावण-भाद्रपद वि0स0 2078 अंक : 7-8 जुलाई-अगस्त 2021 (संयुक्तांक)

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त,
महात्मा प्रभु आश्रित जी के परम शिष्य
दानवीर, यज्ञ व योग के लिए पूर्ण समर्पित,
गुरूकुलों एवं आर्य संस्थाओं के पोषक,
मृदुभाषी, सौम्य, सुशील एवं
उदार, पवित्र हृदय, विश्वसनीय मित्र

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी

को विनम्र श्रद्धांजलि
एवं उनके श्री चरणों में
शत्-शत् नमन

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है। अथर्ववेद

स्व. श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी

तपोवन आश्रम यज्ञशाला में यज्ञ करते हुए

ओ३म्

पवमान

वर्ष–33 अंक–7–8

आषाढ़–श्रावण–भाद्रपद 2078 विक्रमी जुलाई–अगस्त 2021

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,122 दयानन्दाब्द : 197

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: कार्यकारी अध्यक्ष :–

श्री विजय कुमार

मो. : 9837444469

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सहायक सम्पादक :–

अवैतनिक

मनमोहन कुमार आर्य–

मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार	3
यज्ञों का वास्तविक प्रयोजन	डॉ0 कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
यज्ञ एवं दान आदि से जीवन पवित्र करने वाले ऋषि भक्त...	मनमोहन कुमार आर्य	8
आर्यों के प्रेरणास्रोत श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी को श्रद्धांजलि	विजय कुमार	12
स्मृतिशेष महामानव श्री दर्शनकुमार जी को विनम्र श्रद्धांजलि	ई. प्रेम प्रकाश शर्मा	13
श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी के कार्यकाल की कुछ झाकियां		15
तपोवन के अध्यक्ष श्री अग्निहोत्री जी का सार्थक जीवन	आचार्य आशीष आर्य	19
Tribute to Nobel & Pios Soul of Shri Agnihotri Ji	Gopal Krishna Handa	20
आखिर "याज्ञिक" यज्ञ अग्नि में लीन हुआ	वेद प्रकाश आर्य	21
यज्ञनिष्ठ उद्योगपति श्री दर्शन अग्निहोत्री जी	डॉ. अनिल आर्य	23
स्वर्गीय श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी को श्रद्धांजलि	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ	24
श्रद्धेय स्वर्गीय श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी को शत–शत नमन	विनेश आहूजा	25
स्वर्गीय दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी को श्रद्धांजलि	डॉ. राजवीर सिंह शास्त्री	26
स्वामी वेदानन्द सरस्वती को श्रद्धांजलि	मनमोहन कुमार आर्य	27
हनुमान जी की अनन्य निष्ठा एवं हृदय–दर्शन	ईश्वरी प्रसाद प्रेम	30
आर्यसमाज की दिवंगत विभूतियों को श्रद्धांजलि		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य रु. 200/– वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

यज्ञमय–जीवन के नायक को श्रद्धांजलि

यज्ञ शब्द यज् देवपूजा संगतिकरण दानेषु धातु से नङ् प्रत्यय करने से निष्पन्न हुआ है। जिस कर्म में परमेश्वर का पूजन, विद्वानों का सत्कार, संगतिकरण अर्थात् मेल हो और हवि आदि का दान किया जाता है, उसे यज्ञ कहते हैं। यज्ञ शब्द के कहने से अनेक अर्थों/कर्मों का ग्रहण किया जाता है। यहाँ पर यज्ञ से तात्पर्य अग्निहोत्र है। अग्नि और होत्र इन दोनों शब्दों के योग से अग्निहोत्र शब्द निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है–जिस कर्म में अत्यन्त श्रद्धापूर्वक निर्धारित विधिविधान के अनुसार मन्त्रपाठ सहित अग्नि में ओषधयुक्त हव्य आहुत करने की क्रिया की जाये, उसे अग्निहोत्र कहते हैं। यज्ञ के तीन मुख्य अंग हैं–देवपूजा, संगतिकरण और दान। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों, विशेष रूप से पंचमहायज्ञविधि में कहा है कि प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में दैनिक यज्ञ करना चाहिए। आर्यसमाज के सदस्यों में बहुत कम परिवार हैं जिनमें दैनिक यज्ञ की परम्परा है। एक ऐसा परिवार भी है जिसमें दैनिक यज्ञ की परम्परा कभी रुकी नहीं और अविरल रूप से दैनिक यज्ञ चलता रहा है। श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री ऐसे व्यक्ति थे जिनके निवास पर सदैव दैनिक यज्ञ होता रहा है। आपके जीवन और संस्कारों पर वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित के विचारों का अत्यन्त प्रभाव पड़ा था। जब देश के विभाजन के समय इनके परिवार को पाकिस्तान से भारत आना पड़ा, उस समय भी ये अपनी गृहाग्नि को साथ लेकर आए थे और दैनिक यज्ञ की परम्परा, उनके द्वारा सदैव अक्षुण्ण रखी गयी है। यज्ञ के दो और पक्ष हैं–संगतिकरण और दान। यहाँ हम उनकी दान भावना का उल्लेख करेंगे। ऋग्वेद(१०।७५।१) में कहा गया है– **मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। माऽन्तस्थुर्नो अरातयः।।** मन्त्र में प्रार्थना की है–इन्द्र, हे ऐश्वर्यशाली प्रभो! वयं यज्ञात् मा प्रगाम=हम यज्ञ के मार्ग को न छोड़ें, (यज्ञ के मार्ग पर ही चलें।) अरातयः=अदानता, कृपणता, नः अन्तः=हमारे अन्दर (हमारे हृदयों में) मा स्थुः=न ठहरें (स्थिर न रहें)। इस मन्त्र में दो बातें कहीं हैं–न तो हम यज्ञ के मार्ग से विचलित हों, यज्ञ–पथ पर ही चलते रहें एक और दूसरी हमारे अन्दर–हमारे हृदयों में अदानता, अर्थात् कृपणता के भाव न रहें, अर्थात् हम दानशील व उदार बनें। वेद की दृष्टि में यज्ञ का पथ ही जीने का पथ है, मानव को यज्ञ–पथ पर चलते हुए यज्ञमय जीवन जीना चाहिए। सृष्टि के संविधान की यही व्यवस्था है, सृष्टि निर्माता का, सृष्टि के संचालक का यही आदेश है जिसका हमें निष्ठा पूर्वक पालन करना चाहिए। स्मृतिशेष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी दिनांक 16, मई 2021 को इस नश्वर संसार से अपनी इहलीला समाप्त कर अपनी अनन्त यात्रा के लिए प्रयाण कर गए। उनका जीवन न केवल यज्ञमय था अपितु दान के संस्कारों से भी परिपूर्ण था। आपने वैदिक साधन आश्रम तपोवन और अन्य अनेक संस्थाओं के संरक्षण का दायित्व निभाते हुए अपनी असीम दानभावना का परिचय देते हुए आर्यसमाज की अप्रतिम सेवा की, जिसके लिए यह समाज आपका सदा ऋणी रहेगा। आपने अनेक ग्रंन्थों का प्रकाशन करवाकर निशुल्क वितरण भी किया। वह सच्चे मायने में एक आर्यमहाधन थे। हम वैदिक साधन आश्रम तपोवन के सभी पदाधिकारी गण और सभी आर्य उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शत् शत् नमन करते हैं और पत्रिका का यह अंक आपकी स्मृति को समर्पित करते हैं।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

ओ३म्

वेदामृत

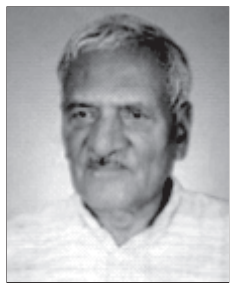

'हे मनुष्य! तू शक्तिशाली बन'

शाग्धि पूर्धि प्रयंसि च, शिशीहि प्रास्युदरम्।
पूषिन्निह क्रतुं विदः।।

ऋग्वेद 1.42.9

ऋषिः कण्वः घौरः। देवता पूषा। छन्दः पिपीलिकामध्या गायत्री।

(पूषन्) हे पुष्टिशील जीवात्मन्! (शग्धि) शक्तिशाली बन, (पूर्धि) स्वयं को पूर्ण बना, (प्रयंसि) प्रयास कर, (शिशीहि) स्वयं को तीक्ष्ण बना, (उदरं) उदर को (प्रासि) भर। (इह) यहां (क्रतुं) कर्तव्य को (विदः) जान।

हे आत्मन्! तुम 'पूषा' हो, स्वयं पुष्टिशील हो तथा अपनी प्रजा–रूप मन, बुद्धि, इन्द्रिय आदि को भी पुष्टि दे सकने वाले हो। पर यदि तुम ही परिपुष्ट न होकर निर्बल बने रहे, तो शरीर का सारा साम्राज्य ही विकृत हो जाने का भय है। अतः तुम अपने 'पूषा' नाम को सार्थक करो। तुम शक्तिशाली बनो, ऐसे शक्तिधर बनो कि जो भी अन्तर्–द्वन्द या मायावी कामादि शत्रु तुम से संघर्ष करने आयें उन्हें परास्त कर सको। तुम स्वयं को पूर्ण बनाओ, पूर्णिमा के चांद के समान पूर्ण हो जाओ। विकास रुका होने के कारण जो तुममें अधूरापन दिखाई देता है, उस अवस्था को दूर करो। वह अधूरापन दूर होगा प्रयास के द्वारा। अतः तुम प्रयास करो, पूर्णता के लिए प्रयास करो, समृद्ध होने के लिए प्रयास करो, कर्तव्य–पालन के लिए प्रयास करो, अपना दिव्यगुणों का साम्राज्य बढ़ाने के लिए प्रयास करो। स्मरण रखो, बिना प्रयास किये स्वयं सफलता द्वार पर आकर खड़ी नहीं हो जाती। तुम स्वयं को तीक्ष्ण करो, जागरुक, प्रतिभावान् तथा प्रखर बनाओ। प्रखरता समस्त शत्रुओं के सम्मुख चुनौती बनकर खड़ी हो सकती है तथा विजय की पताका फहराने में सहायक होती है। इसके विपरीत कुण्ठा संशयों में डालकर पराजय का कारण बनती है।

हे आत्मन्! तुम उदर–पूर्ति करो। तुम्हारा अपना उदर इस शरीर के उदर से भी विशाल है। शरीर का उदर तो थोड़े–से भोजन एवं पेय से भर जाता है, पर तुम्हारे उदर में जितना भी डालते चलो, वह कम ही पड़ता है। तुम्हारी भूख आध्यात्मिकता की भूख है। वह सामान्य भोजन से नहीं, अपितु सत्यशीलता, व्रतपालन, यज्ञ, वेदाध्ययन, अहिंसा, शुचिता, त्याग, परिपक्वता, ब्रह्म–साक्षात्कार आदि के भोजन से शान्त होती है। उस भोजन को तुम अपने लिए भी संचित करो तथा उससे अन्य जनों की भी उदरपूर्ति करो। हे पूषन्। हे मेरे आत्मन्! तुम इस देह या लोक में रहते हुए कर्तव्य को जानो। कर्तव्य को जाने बिना न सही दिशा में प्रयास हो सकता है, न सही दिशा में पूर्णता प्राप्त की जा सकती है, न सही रूप में तीक्ष्णता सम्पादित की जा सकती है। हे आत्मन्! यदि तुम वेद की इस प्रेरणा को वस्तुतः ग्रहण कर लोगे, तभी तुम सच्चे पूषा अर्थात् सच्चे पुष्टि के देव बन सकोगे।

(सामवेद के संस्कृत–हिन्दी भाष्यकार एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक आचार्य डॉ0 रामनाथ वेदालंकार की पुस्तक वेद–मंजरी से साभार प्रस्तुत)

यज्ञों का वास्तविक प्रयोजन

–डॉ0 कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

यज्ञ शब्द के धात्वर्थ में तीन तत्त्व हैं–देवपूजा, संगतीकरण और दान ये तीन अर्थ होते हैं, जो इस शब्द में अन्तर्निहित हैं। तीनों शब्द बहुत अधिक व्यापक अर्थों और भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है–**"यज्ञ एव देवानाम् आत्मा"**(शत0 8/6/1/10)– यज्ञ ही देवों का आत्मा है। इसी ब्राह्मण में अन्यत्र कहा गया है–**"यज्ञो हि देवतानाम् अन्नम्"** अर्थात् यज्ञ ही देवताओं का अन्न है। इसीलिये महर्षि याज्ञवल्क्य अग्नि को देवताओं का मुख बताते हैं। दूसरा अर्थ संगतिकरण का है। महर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण में लिखते हैं–**''या वै प्रजाऽनन्वभक्ताः पराभूताः वै ताः। एवमेवैतद्या इमाः प्रजा अपराभूताः ता यज्ञम् आभजति'' (शत0 1/5/2/4)**, इसका भावार्थ यह है कि जो प्रजा यज्ञ रूपी संगठन की भक्त नहीं है, वह हार जाती है और यज्ञ की भक्त प्रजा कभी नहीं हारती। इसलिए यज्ञ में संगतिकरण एक महत्त्वपूर्ण घटक है। यज्ञ का तृतीय अर्थ दान है। कात्यायन ऋषि ने यज्ञ की व्याख्या करते हुए लिखा है–**"अथ यज्ञं व्याख्यास्यामः–द्रव्यं देवतात्यागः"** अर्थात् यज्ञ देवताओं के लिए द्रव्यत्याग है। ऋग्वेद(01/26/03) में कहा गया है–**"त्वे इत् हूयते हविः"** अर्थात् हे प्रभो! हम तेरे लिए हवि डालते हैं। महर्षि ने अपने समस्त ग्रन्थों और वेदभाष्य में इन शब्दों में अन्तर्निहित व्यापक अर्थों और भावों को ही यज्ञ के परिप्रेक्ष्य में वर्णित किया है। महर्षि ने केवल होम करने को ही यज्ञ नहीं माना है अपितु कहा है कि मनुष्यों को चाहिए कि संसार के उपकार के लिए जैसे विद्वान् लोग अग्निहोत्र यज्ञ का आचरण करते हैं, वैसे अनुष्ठान करें। (यजु0 १७.५५) महर्षि ने यज्ञ का पठन–पाठनरूप भी हमारे समक्ष रखा है। वे कहते हैं कि जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन–पाठन रूप यज्ञकर्म्म करने वाला मनुष्य है, वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा सन्तोष करने वाला होता है, इसलिए ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है। (यजु0 ७.२७) हमारे कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में पाँच प्रकार के यज्ञों का वर्णन मिलता है, जिन्हें पंचमहायज्ञ या पंचायतन पूजा कहते हैं। मनु महाराज से लेकर महर्षि दयानन्द तक सब ऋषियों ने इन पाँचों यज्ञों को प्रत्येक गृहस्थी का दैनिक व अत्यावश्यक कर्म कहा है। वे पाँच यज्ञ हैं– ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है– ब्रह्मयज्ञ उसे कहते हैं, जिसमें ब्रह्म के साथ मेल होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पंचमहायज्ञ विषयक प्रकरण में ब्रह्मयज्ञ के सम्बन्ध में लिखते हैं–साङ्गानां वेदादिशास्त्राणां सम्यग्ध्ययनं सन्ध्योपासनं च सर्वैः कर्त्तव्यम् अर्थात् वेदों का सांगोपांग अध्ययन–अध्यापन और सन्ध्योपासन रूप ब्रह्मयज्ञ सब मनुष्यों का कर्त्तव्य है।

पौराणिक भाष्यकारों का विचार था कि वेद में वर्णित अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि कल्पित स्वर्ग में रहने वाले देवता हैं। ये देवता पृथ्वी पर दिखाई देने वाले अग्नि, वायु और जलादि पदार्थों का और आकाश में दिखाई देने वाले सूर्य, चन्द्रमा और उषा आदि के अधिष्ठात्री देवता माना जाते हैं। इस प्रकार से इन देवताओं के दो प्रकार के स्वरूप हो जाते हैं। एक स्वरूप अग्नि, जल, वायु

आदि के रूप में जड़ पदार्थ के रूप में रहता है और दूसरा स्वरूप अधिष्ठात्री देवता के रूप में मनुष्यों की भांति प्राणधारी व चेतनायुक्त शरीर के रूप में रहता है। उपरोक्त भाष्यकारों के विचार से इन अधिष्ठात्री देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञों में इनसे सम्बन्धित मंत्रों की आहुतियां दी जाती हैं। यह माना जात है कि ये देवता अदृश्य रूप धारण करके यज्ञ में उपस्थित होकर इन पदार्थों का भक्षण करते हैं। वेदमंत्रों के रूप में अपनी स्तुतियों को सुन कर ये प्रसन्न हो जाते हैं और यजमान की उस कामना जिसके लिए यज्ञ किया गया है, पूर्ण करते हैं। यह भी माना जाता था कि इन यज्ञ–याग करने वालों को मरणोपरान्त स्वर्ग में भी भेज देते थे। स्वर्ग में इन्हें देवताओं की भांति ही सुखभोग प्राप्त होते थे।

महर्षि ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा इस प्रकार की है– 'जो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेधपर्यन्त, वा जो शिल्पव्यवहार ओर पदार्थविज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार क लिए किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं। महर्षि का कहना है कि देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण नहीं करते हैं। महर्षि दयानन्द को अधिष्ठात्री देवों की सत्ता स्वीकार्य न थी। उनके द्वारा तत्कालीन यज्ञ परम्परा का घोर विरोध किया गया। अपने वेदभाष्य व सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने देवतावाची पदों का सही अर्थ प्रस्तुत किया। सप्तम समुल्लास में देवता की परिभाषा देते हुए महर्षि कहते हैं– 'देवता' दिव्यगुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं, जैसी कि पृथिवी। परन्तु इसको कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। महर्षि के अनुसार वेदों का अध्ययन करने पर कहीं पर भी ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है कि अग्नि, वायु, जल, आदि जड़ पदार्थों के मनुष्य जैसे शरीरधारी चेतन अधिष्ठात्री देवता भी पाये गये हों। इस प्रकार पारम्परिक यज्ञकर्त्ताओं की यह धारणा कि यज्ञों में मंत्रों के द्वारा देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण करते हैं और इस कृत्य से प्रसन्न होकर यज्ञकर्त्ता का कल्याण करते हैं, वेद के प्रतिकूल है। महर्षि ने अपने वेदभाष्य से यह सिद्ध कर दिया कि वेद में वर्णित देवताओं का वह स्वरूप नहीं है जो मध्यकाल के विनियोगकारों और सायणाचार्य आदि भाष्यकारों ने वर्णित किया है।

स्वर्ग के सम्बन्ध में महर्षि की अवधारणा–

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के नवें समुल्लास में स्वर्ग की परिभाषा देते हुए कहा हे कि सुखविशेष स्वर्ग और दुःखविशेष भोग करना नरक कहलाता है। **'स्वः' सुख का नाम है। 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः' 'अतो विपरीतो दुःखभोगो नरक इति'** जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग कहाता है। महर्षि के अनुसार आकाश के किसी स्थान विशेष में स्वर्गलोक नामक कोई स्थान नहीं है। वे किसी काल्पनिक स्वर्गलोक की सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके अनुसार सुख–समृद्धि से परिपूर्ण जीवन ही स्वर्ग का जीवन है। सायणादि आचार्यों और मध्ययुगीन याज्ञिकों का यह विचार था कि अग्नि, वायु, इन्द्र आदि देवता वेदमंत्रों के द्वारा आहूत किए जाने पर न केवल हवियों का भक्षण करते थे अपितु प्रसन्न होकर यजमान की कामनाओं को पूर्ण करते थे और उसके मरने के बाद उसे स्वर्गलोक में भेज देते थे। ऐसा कोई स्वर्गलोक आजतक किसी को दिखाई नहीं दिया है। इस प्रकार स्वर्गलोक और उसके विपरीत नरकलोक की कल्पना पूर्णतः असत्य व भ्रामक है, जिसका महर्षि ने कठोर शब्दों में निन्दा की है।

यज्ञों का वास्तविक प्रयोजन–

महर्षि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदविषयविचार नामक अध्याय के अन्तर्गत कहते हैं कि सुगन्ध आदियुक्त द्रव्य अग्नि में डाला जाता है, उसके अणु अलग–अलग हो के

आकाश में रहते ही हैं, क्योंकि किसी द्रव्य का वस्तुतः अभाव नहीं होता। इससे वह द्रव्य दुर्गन्धादि दोषों का निवारण करने वाला अवश्य होता है। फिर उससे वायु और वृष्टिजल की शुद्धि होने से जगत् का बड़ा उपकार और सुख अवश्य होता है। इस कारण से यज्ञ को करना चाहिए। पुनः इस शंका का निवारण करते हुए कि अतर और पुष्प आदि घरों में रखने से भी वायु और जल की शुद्धि की जा सकती है, महर्षि कहते हैं कि यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता है, क्योंकि अतर और पुष्पादि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु में मिल के रहता है, उस को छेदन करके बाहर नहीं निकल सकता और न वह ऊपर चढ़ सकता है, क्योंकि उसमें हलकापन नहीं होता है। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर का शुद्ध वायु उस ठिकाने में जा भी नहीं सकता क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता है। फिर सुगन्ध और दुर्गन्ध वायु के वहीं रहने से रोगनाशादि फल भी नहीं होते हैं। महर्षि ने वेद मंत्रों का भाष्य करते समय कई स्थलों पर यज्ञ करने के प्रयोजन का उल्लेख किया है। कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं–

(१) विद्वानों को ईश्वर की प्रार्थना सहित ऐसा अनुष्ठान करना चाहिए कि जिससे पूर्णविद्या वाले शूरवीर मनुष्य तथा वैसे ही गुणवाली स्त्री, सुख देनेहारे पशु, सभ्य मनुष्य, चाही हुई वर्षा, मीठे फलों से युक्त अन्न और ओषधि हों तथा कामना पूर्ण हो। (यजु0 भा0 २२.२२)

(२) जो मनुष्य आग में सुगन्धि आदि पदार्थों को होमें, वे जल आदि पदार्थों की शुद्धि करने हारे हो पुण्यात्मा होते हैं और जल की शुद्धि से ही सब पदार्थों की शुद्धि होती है, यह जानना चाहिए। (यजु0 भा0 २२.२५)

(२) ऋगवेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचार अध्याय में महर्षि ने वर्णित किया है कि यज्ञ में जो वाष्प उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है, इससे वह यज्ञ परोकार के लिए ही होता है।

(३) जो विद्वानों क सुख, पढ़ने, अन्तःकरण के विशेष ज्ञान तथा वाणी और पवन आदि पदार्थों की शुद्धि के लिए यज्ञ क्रियाओं को करते हैं, वे सुखी होते हैं।(यजु0 भा0 २२.२०)

यज्ञों में विनियोग–

उवट और महीधर के भाष्य मुख्य रूप से कात्यायन–श्रौतसूत्र में विनियोजित कर्मकाण्ड का अनुसरण करते हैं और सायण के भाष्य भी इसी प्रकार से कर्मकाण्डीय परम्परा का अनुसरण करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि पूर्वकृत विनियोग कोई अटल रेखा नहीं कि उसका अनुसरण करना अनिवार्य हो। सभी आचार्यों ने एक मंत्र का विनियोग एक प्रकार से ही नहीं किया है। उन्होंने एक मंत्र का अन्य प्रकार से भी विनियोग किया है। इससे यह प्रतीत होता हे कि मंत्र का पूर्वकृत विनियोगों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पूवकृर्त विनियोगों के सम्बन्ध में कहा है कि जो युक्तिसिद्ध एवं वेदादि प्रमाणों के अनुकूल हो तथा जो मंत्रार्थ के अनुसार हो, वह विनियोग ग्राह्य हो सकता है। महर्षि ने स्वयं को पूवकृत विनियोगों के बन्धन में नहीं बांधा और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ही कहा कि वेद केवल कर्मकाण्ड नहीं है, ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड और विज्ञानकाण्ड परक अर्थ भी किए जाने चाहिएं। उनके भाष्य से वेद में अग्नि, वायु आदि वेदवर्णित देवताओं से अनेक देवों की पूजा की भ्रान्ति नहीं होती है। अन्य भाष्यकारों ने अग्नि, वायु आदि से परमेश्वर से भिन्न अभिमानी देवों का ग्रहण किया है, वहीं महर्षि ने उन्हें, एक परमेश्वर का गुणवाची माना है।

यज्ञों में पशुवध का निरोध–

कर्मकाण्ड के अनुसार यजुर्वेद के प्रथम अध्याय से द्वितीय अध्याय के अठाईसवें मंत्र तक दर्शपूर्णमास यज्ञ है। महीधर की कर्मकाण्डपरक व्याख्या में षष्ठ अध्याय के मंत्र 7 से 22 तक अग्नीषोमीय पशु का प्रयोग आता है। इसमें छाग (बकरे) को देवताओं के लिए काटा जाता है। मंत्र 7 से 19 तक पशु को मारने आदि की विधि का वर्णन किया गया है। मंत्र 20 के अनुसार अध्वर्यु मृत पशु के सब अंगों को स्पर्श करके कहता है कि इस पशु के अंग–अंग में प्राण निहित किया और पशु को कहता है कि तुम जीवित होकर देवताओं के समीप जाओ। उसके बाद प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज् पहले से ही पृथक् रखे हुए पशु के पिछले हिस्से को ग्यारह भागों में बांट कर, **"समुद्रं गच्छ स्वाहा"** आदि ग्यारह मंत्रांशों से आहुति देते हैं। (मंत्र २१)। अन्त में सब यजमान और ऋत्विज् वरुण से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें भय से मुक्त करें। (मंत्र २२) महर्षि दयानन्द ने उक्त मंत्र का अर्थ करते हुए कहा है कि यह उस अवसर का है जब बालक के माता–पिता विद्याध्ययानार्थ उसे गुरुकुल में प्रविष्ट कराने लाये हैं। आचार्य अपने इस नवागत शिष्य को सम्बोधित करके कहता है–हे शिष्य! मैं समस्त ऐश्वर्य युक्त, वेदविद्या प्रकाश करने वाले परमेश्वर के उत्पन्न किये हुए इस जगत् में सूर्य और चन्द्रमा के गुणों से वा पृथिवी के हाथों के समान धारण और आकर्षण गुणों से प्रीति करते हुए तुझको जो ब्रह्मचर्य धर्म के अनुकूल जल और ओषधि हैं, उन जल और गोधूम आदि अन्नादि पदार्थों से नियुक्त करता हूँ। तुझे मेरे समीप रहने के लिए तेरी जननी अनुमोदित करे, सहोदर भाई अनुमोदित करे, मित्र अनुमोदित करे और तेरे सहवासी अनुमोदित करें। अग्नि और सोम के तेज ओर शांति गुणों में प्रीति करते हुए तुझको उन्हीं गुणों से ब्रह्मचर्य के नियम–पालन के लिए अभिषिक्त करता हूँ। बकरे के यज्ञ में बलि करने के सम्बन्ध में माता–पिता, भाई और मित्र अनुमोदित करें, यह सन्दर्भ के प्रतिकूल है और इससे सिद्ध होता है कि इस प्रसंग में यह अर्थ पूर्णतः वास्तविक अर्थ से भिन्न व प्रतिकूल है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि वेद में बलात पशु बलि सम्बन्धी प्रसंग डालने का प्रयास किया गया है। महर्षि ने यज्ञ का वास्तविक प्रयोजन बताते हुए, एक व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की है। उपरोक्त समस्त तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि याज्ञिक विचारधारा को महर्षि ने एक अप्रतिम योगदान दिया है।

सफल जीवन बनाने की युक्ति

1. नाकाम जीवन न बनाओ, जीवन को निष्काम बनाओ।
2. जन्म औरजीवन दो चीजें हैं। जन्म तो परमात्मा ने पूर्व कर्म फल रूप में दिया है, ओर जीवन बनाना पड़ेगा स्वयम्।
3. संसार के धन्धे जो पेट के लिए हैं और शुभ कर्म जो आशा और स्वार्थ सिद्धि के लिए हैं, वे सब जीवन को नाकाम बनाने वाले हैं। जीवन वह है जो अन्तः करण को शुद्ध करने वाला हो।
4. शुद्ध अन्तःकरण ही अपने स्वामी प्रभु का कृतज्ञ बनाकर उसकी उपासना के योग्य बनाता है।
5. जीवन की सफलता विद्या और शिक्षा में है। शिक्षा के अंग श्रम संयम सदाचार और सेवा हैं। उनको अपनाने से जीवन मानव जीवन बन जाता है।

– महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

यज्ञ एवं दान आदि से जीवन पवित्र करने वाले ऋषि भक्त यशस्वी दर्शनकुमार अग्निहोत्री

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

देश में ऋषि दयानन्द के अनेक अनुयायी हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन एवं कार्यों से अनेक आदर्श प्रस्तुत किये हैं। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून सहित आर्यजगत की अनेक संस्थाओं में अधिकारी रहकर अपने दान आदि सत्कर्मों से अनेक संस्थाओं व गुरुकुलो आदि का पोषण करने वाले श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी का जीवन आदर्श एवं अनुकरणीय कार्यों का जीवन्त उदाहरण है। वह ऐसे ऋषिभक्त तथा वैदिक धर्म प्रेमी सत्पुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन में प्रतिदिन देवयज्ञ का अनुष्ठान करके एक आदर्श उपस्थित किया है। श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का जन्म अविभाजित भारत के पाकिस्तान बने भाग में हुआ था। वहां उनके माता, पिता श्रीमती शान्ति देवी जी और श्री गणेशदास अग्निहोत्री जी ऋषिभक्त महात्मा प्रभु आश्रित जी के सम्पर्क आये थे। उनकी प्रेरणा एवं संगति से उन्होंने दैनिक यज्ञ को अपनाया था। दैनिक यज्ञ उनके जीवन का अनिवार्य कार्य होता था। उनके परिवार में यज्ञ की अग्नि कभी बुझी नहीं। सन् 1947 में देश का विभाजन होने पर वह अपने माता–पिता एवं संबंधियों सहित भारत आये थे। वह जिस विमान से पाकिस्तान से भारत आये थे उसमें यज्ञकुण्ड व यज्ञ की अग्नि भी साथ लाये थे। पाकिस्तान में वह अपनी समस्त भौतिक धन–सम्पत्ति छोड़कर आये और अपने साथ केवल यज्ञकुण्ड व यज्ञ अग्नि लेकर ही आये जिसे उन्होंने वर्तमान समय तक प्रदीप्त रखा है। सन् 1947 के बाद से अभी तक उनके परिवार में प्रातः व सायं दोनों समय होता रहा। उन्होंने अपने गृह पर यज्ञ की अग्नि कभी बुझने नहीं दी। आर्यसमाज में ऐसा उदाहरण अन्य किसी गृहस्थ का हमें सुनने को नहीं मिलता। ऐसा होना तो वैदिक युग में ही सम्भव लगता है। अतः जीवन भर यशस्वी दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी ने यज्ञ की अग्नि को जलाये रखकर धार्मिक एवं आध्यात्मिक जगत में एक महनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इतने वर्षो तक निरंतर यज्ञ करने के साथ ही आपने एक सफल व्यवसायी व फर्नीचर उद्योग का भी संचालन कर उसमें धन एवं नाम कमाया और अपना अर्जित सभी धन यज्ञ, वेद प्रचार, गुरुकुलों की सहायता, विद्वानों को दक्षिणा, परोपकार के अनेकानेक कार्यों सहित आर्य संस्थाओं को प्रभूत दान आदि धर्म कार्यों में व्यय किया। वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून तथा वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक आपकी तपस्थलियां एवं स्मारक हैं जहां आपके मार्गदर्शन में वेद प्रचार एवं मानव निर्माण के अनेक कार्य हुए हैं व वर्तमान में भी चल रहे हैं। हम आशा करते हैं कि यह दोनों संस्थायें आपके मित्रों एवं सहयोगियों द्वारा पूर्ववत् क्रियाशील रहेंगी और सामाजिक उन्नति के अपने दायित्वों को पूरा करती रहेंगी।

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी वैदिक साधन आश्रम के प्रधान रहे। वह अपने माता, पिता के साथ सन् 1950 से बचपन व अपनी किशोरावस्था से ही इस आश्रम में आया करते थे और यहां रहकर विद्वानों व तपस्वी साधकों से प्रेरणायें व आशीर्वाद प्राप्त किया करते थे। आपके कुलगुरु व कुलपुरोहित महात्मा प्रभु आश्रित जी ने भी यहां रहकर तप किया था और योग की प्रमुख सिद्धि आत्म एवं ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त किया था जिसका उल्लेख उन्होंने स्वयं अपने एक पत्र में किया जो उन्होंने तपोवन आश्रम के एक सहसंस्थापक महात्मा आनन्द स्वामी जी को यहां रहकर साधना करने के बाद लिखा था। किसी व्यक्ति व परिवार को एक सद्गुरु का उपदेश, सत्संग, संगति व सान्निध्य मिलना सौभाग्य की बात होती है। अग्निहोत्री परिवार को यह लाभ महात्मा प्रभु आश्रित जी के सत्संग एवं सान्निध्य से सुलभ रहा। अग्निहोत्री जी ने अपने माता–पिता की परम्परा को अपने जीवन में जारी रखने के साथ उसे और बढ़ाया भी। वह अपनी धर्मपत्नी माता सरोज अग्निहोत्री जी के साथ मिलकर महात्मा प्रभु आश्रित जी की आज्ञाओं व शिक्षाओं का जीवन भर पालन करते रहे। देहरादून में जो वृहद एवं सुन्दर सभागार भवन बनाया गया है उसका नाम भी महात्मा प्रभु आश्रित भवन ही रखा गया है। अग्निहोत्री जी सन् 2008 में वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सोसायटी के प्रधान बने थे। आपके प्रधान बनने के बाद वैदिक साधन आश्रम तपोवन ने अपने उद्देश्यानुसर कार्य करते हुए उल्लेखनीय प्रगति की है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन में वर्ष में दो बार पांच दिवसीय शरदुत्सव एवं ग्रीष्मोत्सव आयोजित किये जाते रहे। आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक इन उत्सवों में पधारते रहे हैं। इस अवसर पर अनेक हवनकुन्डों में किसी एक वेद का पारायण यज्ञ भी आयोजित किया जाता था। हमें भी सन् 1975 से ही तपोवन आश्रम में आने व उत्सवों में भाग लेने का अवसर मिला। हमने आश्रम के जो कार्य 45 वर्ष व उसके बाद देखे थे वही सब वर्तमान में भी यहां होते रहे हैं। अग्निहोत्री जी के कार्यकल में आश्रम ने प्रशंसनीय उन्नति की है। यहां आश्रम का नया सभागार एवं कार्यालय बनाया गया है। एक वृहद चिकित्सालय भवन भी बनाया गया है। अग्निहोत्री जी के दान से यहां अनेक कुटियायें बनी हैं और सभागार सहित यज्ञशाला एवं अन्य भव्य भवनों में भी आपका परामर्श एवं प्रभूत आर्थिक सहयोग रहा है। आश्रम की प्रमुख इकाई की ही भांति पर्वतीय इकाई तपोभूमि में भी वृहद एवं भव्य यज्ञशाला सहित एक सभागार एवं अनेक कुटियों का निर्माण हुआ है। यह स्थान महात्मा आनन्द स्वामी जी सहित अनेक प्रसिद्ध येागियों की साधना स्थली रहा है। आश्रम की इस ईकाई में यह सब कार्य जहां अग्निहोत्री जी की प्रेरणा से सम्पन्न हुए वहीं इसमें आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी का भी महान तप एवं पुरुषार्थ लगा है। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी और आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी भी तपोवन आश्रम की शोभा व प्राण रहे हैं। स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी ने आश्रम को अर्थदान सहित अपने तप, वेद पारायण यज्ञों सहित उपदेशों आदि से पोषण किया है। उनके द्वारा यहां प्रतिवर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराये जाते हैं। आचार्य आशीष जी भी समय समय पर वर्ष में कई बार यहां युवकों के लिए चरित्र निर्माण एवं जीवन निर्माण के शिविर लगाते हैं।

हमने इन सब विद्वानों को इस आश्रम में देखा व इनके उपदेशों को सुना है। यह हमारा सौभाग्य रहा है। इन सब प्रमुख महानुभावों के सत्प्रयासों से, वर्तमान की विषम परिस्थितियों में, आश्रम निरन्तर उन्नति करता आ रहा है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में आश्रम पूर्व की ही भांति उन्नति करता रहेगा और इस आश्रम में अग्निहोत्री जी की स्मृति बनी रहेगी। हम इस बात से भी अवगत है कि अग्निहोत्री जी जब दिल्ली से आश्रम आते थे तो यहां आश्रम द्वारा संचालित तपोवन

विद्या निकेतन की शिक्षिकाओं के लिये साड़ियां आदि सामान लाया करते थे और उन्हें अपनी ओर से भी कुछ धनराशि आदि का सहयोग करते थे। पढ़ाई में अग्रणीय व निर्धन तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों को छात्रवृत्तियां व प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि से भी सम्मानित करते थे। उत्सवों के अवसरों पर आश्रम में पधारे सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों आदि का प्रातराश आपकी ही कुटियां वा निवास में होता है। अनेक अवसरों पर हम भी इसमें सम्मिलित हुए हैं। हमें आगरा के एक विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, जो प्रायः प्रत्येक उत्सव में यहां आते रहे हैं, बताया कि प्रातराश कराने के अतिरिक्त अग्निहोत्री जी अपनी ओर से विद्वानों को दक्षिणा भी प्रदान किया करते थे। आपने एक 'अग्निहोत्री धर्मार्थ न्यास' बनाया हुआ था जिसकी ओर से तपोवन में आयोजित उत्सवों में आर्यजगत के विद्वानों व उत्तम सेवा कार्य करने वाले विद्वानों आदि को ग्यारह हजार रुपये की धनराशि एवं शाल तथा सम्मान पत्र भेंट कर सम्मान किया जाता था। तीन वर्ष पूर्व एक साथ कई विद्वानों का सम्मान किया गया था जिसमें एक उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. जयदत्त उप्रेती जी हैं। कई वर्ष पूर्व हमारा भी सम्मान किया गया था जिसके लिए हम अग्निहोत्री जी व उनके न्यास के सदैव ऋणी है। महात्माओं वाले अनेक गुणों से युक्त अग्निहोत्री जी को हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। ईश्वर उनको उत्तम गति प्रदान करेंगे, इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

अग्निहोत्री जी आर्यजगत की अनेक संस्थाओं का पोषण करते थे। इन संस्थाओं में एक संस्था वैदिक भक्ति साधन आश्रम, सुन्दरपुर, रोहतक भी है। इस संस्था की सभी गतिविधियों में अग्निहोत्री जी का प्रमुख योगदान होता था और आर्थिक दृष्टि से भी आप इसमें प्रभूत सहयोग करते थे। पूर्व के वर्षो में आप इसके प्रधान भी रहे। आपने यहां से महात्मा प्रभु आश्रित जी के प्रायः सभी ग्रन्थों का भव्य प्रकाशन किया है। आज महात्मा प्रभु आश्रित जी के सभी ग्रन्थ यहां से सुलभ होते हैं जिसमें आपका बहुत बड़ा योगदान है। हम आशा करते हैं कि यह आश्रम निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगा और यहां पर अग्निहोत्री जी के जन्म दिवस पर विशेष यज्ञ यथा वेद पारायण यज्ञ आदि करके एक संक्षिप्त उत्सव किया जाया करेगा जिसमें आश्रम प्रेमी व वैदिक धर्मी लोग भाग लेकर अग्निहोत्री जी व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सरोज अग्निहोत्री (मृत्यु दिनांक 24–11–2018) को इस आश्रम की उन्नति में किये गये उनके योगदान को स्मरण कर उनसे प्रेरणा ग्रहण करने सहित उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया करेंगे।

हमने अनेक अवसरों पर श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी को वैदिक साधन आश्रम तपोवन में यज्ञ में सपत्नीक यजमान के आसन पर बैठकर श्रद्धापूर्वक यज्ञ करते देखा है। एक अवसर पर गुरुकुल पौंधा में भी चारों वेदों के शतकों से यज्ञ किया गया था। उसका मनोरम दृश्य भी हमारी आंखों में उपस्थित हो रहा है। गुरुकुलों का उन्होंने पूरी सामर्थ्य से पोषण किया। वैदिक मान्यता है कि हम अपने वर्तमान जन्म में वेद विद्या के प्रचार प्रसार व सुपात्रों को जो दान देते हैं वह हमें परजन्म में प्राप्त होता है। अग्निहोत्री जी व उनके परिवार ने जीवन भर यज्ञों के आयोजन तथा दान आदि पुण्य कार्यों से वेद व आर्य संस्थाओं सहित गुरुकुलों का जो पोषण किया है उससे वह निश्चय ही परलोक में उत्तम गति के अधिकारी बने हैं। अग्निहोत्री जी का देहावसान दिनांक 16 मई, 2021 की प्रातः 2.00 बजे नोएडा–दिल्ली के कैलाश अस्पताल में कोरोना रोग से हुआ। उनकी आयु 78 वर्ष की थी। हम अग्निहोत्री जी की आत्मा की उत्तम गति व सुख शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। हमने अपने एक पूर्व लेख में अग्निहोत्री जी से संबंधित कुछ पंक्तियां लिखीं थी। उसे

यहां प्रस्तुत कर लेख को विराम देते हैं।

महात्मा प्रभु आश्रित जी के जीवन व व्यक्तित्व के बारे में हमारे एक मित्र स्वर्गीय श्री वेद प्रकाश जी, देहरादून हमें बताया करते थे कि एक दम्पत्ति श्री गणेश दास कुकरेजा और उनकी देवी श्रीमति शान्ति देवी जी पाकिस्तान में महात्मा जी के सम्पर्क में आये व उनके भक्त वा शिष्य बने। महात्मा जी द्वारा दैनिक यज्ञ की प्रेरणा किए जाने पर उन्होंने कहा कि हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं कि हम यज्ञ की सामग्री आदि पदार्थ खरीद सकें। महात्मा जी ने प्रेरणा की कि आप प्रयास करें, प्रभु सब प्रबन्ध कर देंगें। श्री गणेश दास जी ने प्रयास किया और लाहौर में 13 जनवरी, 1939 से दैनिक यज्ञ करना आरम्भ कर दिया। इसके बाद आप मृत्युपर्यन्त यज्ञ करते रहे जिसका निर्वहन उनके सुयोग्य पुत्र श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री अद्यावधि तक करते रहे। यह भी उल्लेखनीय है कि आपके यहां 13 जनवरी, 1939 मकर संक्रान्ति के दिन यज्ञ की जो अग्नि महात्मा जी की प्रेरणा से प्रज्जवलित हुई थी वह आज तक निरन्तर अबाधित एवं प्रज्जवलित है। आपके परिवार ने उसे बुझने नहीं दिया। श्री गणेश दास कुकरेजा आर्यसमाज में श्री गणेशदास अग्निहोत्री के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपने सभी धार्मिक संस्थाओं को दिल खोलकर दान किया। यह मुख्य बात बताना भी उपयोगी होगा कि जब श्री गणेशदास जी ने यज्ञ आरम्भ किया तो आपके पास यज्ञ करने के लिए धन नहीं था। कुछ ही समय बाद आप फर्नीचर के उद्योग से जुड़कर उद्योगपति बने और अर्थाभाव हमेशा के लिए दूर हो गया। आर्यजगत के विद्वान आचार्य उमेशचन्द कुलश्रेष्ठ कहते हैं कि यज्ञ करने वाला अभावों से मुक्त तथा आर्थिक रूप से समृद्ध होता है और उसकी वंशवृद्धि चलती रहती है, उसका वंशच्छेद नहीं होता। एक वार्तालाप में श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी ने हमें बताया कि अगस्त 1947 में पाकिस्तान बनने पर वहां से लोग अपनी बहुमूल्य वस्तुएं लेकर आये थे परन्तु हमारे माता–पिता सब कुछ वहीं छोड़कर केवल यज्ञकुण्ड व उसकी अग्नि को सुरक्षित भारत लाये थे जो आज तक निर्बाध रूप से प्रज्जवलित है। हमें लगता है कि श्री गणेशदास अग्निहोत्री जी तथा उनके पुत्र स्व. दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने जो आत्मिक एवं भौतिक उन्नति की उसमें उनके यज्ञमय जीवन एवं पुरुषार्थ का ही प्रमुख योगदान था।

आचार्य रामदेव जी दिवंगत

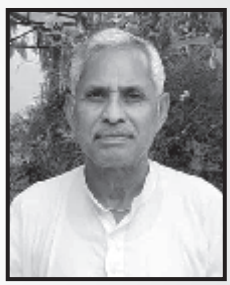

महर्षि दयानन्द इण्टर कॉलेज टनकपुर के प्रतिष्ठित प्रबन्धक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के छाया सत्र के उप प्रधान आचार्य रामदेव जी का दिनांक 16 मई 2021 को निधन हो गया। देवत्व की भावना एवं अनुकरणीय आचरण के धनी आचार्य रामदेव जी का कुमाऊं क्षेत्र में समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में अत्यधिक प्रतिष्ठा एवं सम्मान था। उत्तराखण्ड के समस्त आर्यों द्वारा उन्हें भविष्य में बड़ी जिम्मेदारी देने पर विचार किया जा रहा था लेकिन उनके निधन से आर्य समाज को भारी क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति करना असंभव है।

ईश्वर से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

आर्यों के प्रेरणास्रोत श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी

—विजय कुमार
उपप्रधान, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का आकस्मिक निधन समस्त आर्यजगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। श्री अग्निहोत्री जी यज्ञप्रेमी, धर्मनिष्ठ, मृदुभाषी, चेहरे पर मधुर मुस्कान, दानशील एवं अत्मीयतापूर्ण व्यवहार के धनी थे। मैं सन् 1975 में अपने माता–पिता स्व0 श्री दीपचन्द आर्य एवं श्रीमती कौशल्या आर्या के साथ उनसे मिला। उसके बाद वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून तथा वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक के माध्यम से उनसे परिचय बढ़ता गया। वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में मुझे पिछले कई वर्षों से उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हआ। अध्यक्ष पद पर रहते हुए आश्रम की उन्नति में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तपोवन आश्रम का जो आज भव्य एवं विशाल रूप देखने को मिलता है वह अग्निहोत्री जी के सहयोग के बिना संभव नहीं था फिर चाहे वह आश्रम के भवनों का निर्माण हो या सत्संग भवन, वृहत यज्ञशाला तथा अस्पताल का निर्माण, इन सभी कार्यों में उन्होंने आश्रम को मार्गदर्शन तथा आर्थिक सहयोग प्रदान किया। तपोवन आश्रम के साथ–साथ उन्होंने अनेकों आश्रमों, आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों, के निर्माण में भी आर्थिक सहयोग दिया। इसके अलावा साधुओं, सन्यासियों, अनाथों एवं जरूरतमंदों की भी हर प्रकार से सहायता की। ऐसे दानशील पुण्य आत्मा का हमारे बीच से चले जाना आर्य जगत की बहुत बडी क्षति है।

श्री अग्निहोत्री जी महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी थे। यज्ञ के प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा थी। उनके आवास पर प्रति दिन दोनों समय यज्ञ होता था। उन्होंने सैकड़ो बार चतुर्वेद पारायण यज्ञों का आयोजन किया। उनसे प्रभावित होकर हजारों लोगों को यज्ञ करने की प्रेरणा मिली। महर्षि दयानन्द जी के साथ–साथ वे महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज तथा स्वामी दीक्षानन्द जी से भी अत्यंत प्रभावित थे।

श्री अग्निहोत्री जी यज्ञप्रेमी एवं दानशील होने के साथ–साथ अतिथियों के प्रति भी विनम्र श्रद्धाभाव रखते थे। तपोवन के कार्यक्रमों में उनकी कुटिया पर सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों, ब्रह्मचारियों और आचार्यों के भोजन इत्यादि की व्यवस्था रहती थी तथा वे अत्यंत प्रेमपूर्वक सभी का आतिथ्य सत्कार करते थे।

आज भौतिक शरीर से श्री अग्निहोत्री जी हमारे बीच नहीं है लेकिन उनके आदर्श सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवगंत आत्मा को मोक्षगामी बनाऐं और सभी परिवारजनों को इसी प्रकार वैदिक संस्कृति के पालन–पोषण हेतु प्रेरणा प्रदान करता रहे। मैं श्री अग्निहोत्री जी को समस्त आर्य जनों की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

स्मृतिशेष महामानव, दानवीर, यज्ञप्रेमी श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी को विनम्र श्रद्धांजलि

—इ0 प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी सन् 2008 में वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए और मुझे सचिव के रुप में उनके साथ लगभग 13 वर्षों तक सेवा करने का अवसर मिला। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह अति विनम्र थे, दानी थे, गुरुकुलों के संरक्षक थे।, यज्ञ उनकी प्राथमिकता थी, सन्त महात्माओं, और विद्वानों के आदर सत्कार को वह अपना सौभाग्य मानते थे, प्रत्येक शुभ कार्य के लिए ईश्वर का धन्यवाद करना उनकी आदत थी।

ऐसे अध्यक्ष को पाकर तपोवन आश्रम धन्य हो गया। उनके कुशल नेतृत्व और ईश्वर की महान अनुकम्पा से उनके मार्गदर्शन में सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने सहयोग प्रदान किया जिसके फलस्वरुप 4000 वर्गफुट में फैला चिकित्सालय भवन, महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन, यज्ञशाला का विस्तारीकरण, नये आवासीय भवनों का निर्माण, गौशाला का निर्माण, तपोभूमि में 250 व्यक्तियों के लिए योग साधना हुतु सत्संग भवन, 5 हवन कुंड़ों वाली 50 फीट X 50 फीट की यज्ञशाला, तपोवन विद्या निकेतन के भवन का नवीनीकरण आदि अनेक निर्माण कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

तपोवन आश्रम द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका पवमान के आदि सम्पादक श्री देवदत्त बाली जी के अस्वस्थ हो जाने पर पत्रिका के सम्पादन एवं प्रिंटिंग आदि की समस्त

जिम्मेदारी अध्यक्ष जी ने सहर्ष अपने ऊपर ली और 6 वर्षों तक लगातार पवमान पत्रिका का प्रकाशन दिल्ली से होता रहा। इस प्रकार वह बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

श्री अग्निहोत्री जी ने अध्यक्ष पद संभालने के बाद तपोवन विद्यानिकेतन के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया और अध्यापक–अध्यापिकाओं का मनोबल बढ़ाने के लिए शिक्षक वर्ग को उत्सवों के अवसर पर सार्वजनिक रूप से सम्मानित करने की योजना को कार्यान्वित किया तथा अपने घनिष्ट मित्र श्री गोपाल कृष्ण हांड़ा जी के साथ मिलकर प्रतिमाह कक्षा नर्सरी से आठवीं कक्षा तक के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्रओं को छात्रवृत्ति देकर उनका उत्साहवर्धन किया।

एक ओर जहाँ वह अतिसरल, मृदुस्वभाव, मधुरवाणी के आर्य पुरुष थे वही एक अच्छे प्रशासक भी थे। जिन व्यक्तियों ने तपोवन आश्रम की प्रगति में बाधक बनने का प्रयास किया, उचित अवसर पर उन्हें तपोवन आश्रम की कार्यकारिणी से निष्कासित करने में उन्होंने जरा भी देर नहीं लगाई।

मार्च 2021 में स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज के मार्गदर्शन में तपोभूमि में 21 दिन चलने वाला चतुर्वेद पारायण यज्ञ आयोजित किया गया था। यज्ञ के प्रति उनकी इतनी श्रद्धा व निष्ठा थी कि अस्वस्थ होते हुए भी वह सड़क मार्ग से 26 मार्च को देहरादून आये और 28 मार्च 2021 को यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त अपने कर कमलों से माता सुनन्दा जी तथा अन्य सन्त महात्माओं और विद्वानों को सम्मानित किया। यह कार्य करने के बाद वह अति प्रसन्नता पूर्वक देहरादून से दिल्ली सकुशल वापिस गये। उसके उपरान्त उनसे हर तीसरे दिन मेरी बात होती थी लेकिन 8 मई 2021 के बाद प्रतिदिन उनका फोन आने लगा और कभी–कभी दिन में दो बार भी वह आश्रमवासियों का कुशलक्षेम पूछने लगे। तब अचानक 16 मई 2021 को प्रातः समाचार मिला कि हम सबके सम्माननीय, दानवीर, आर्य श्रेष्ठ श्री अग्निहोत्री जी इस दुनिया में नहीं रहे।

श्री अग्निहोत्री जी के अथक प्रयासों के फलस्वरूप वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून को विश्व स्तर पर पहचान मिली और अनेक देशों से योग जिज्ञासु योगशिविरों में सम्मलित होने के लिए देहरादून आने लगे उनके निर्देशानुसार प्रतिवर्ष 5–5 दिन तक चलने वाला ग्रीष्मोत्सव तथा शरदुत्सव का आयोजन किया गया तथा प्रतिवर्ष 15 मई को स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह भी निरन्तर कई वर्षों तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें डा0 अनिल आर्य जी के माध्यम से सैकड़ों की संख्या में दिल्ली के भाई–बहिन तपोवन आश्रम पधारे।

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी आज हमारे बीच नहीं है लेकिन हमें अनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को यज्ञमय बनाना है ताकि हमारा जीवन भी सुगन्धित हो और इस संसार से विदा लेते समय हमें यह सन्तोष रहे कि हमने अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए तथा अपने परिवार और समाज को आर्य बनाने के लिए कुछ योगदान दिया है। श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी को भारतवर्ष की सभी आर्य समाजों, गुरुकुलों, अनाथाश्रमों, तथा तपोवन आश्रम देहरादून द्वारा उनके द्वारा की गई सेवाओं के लिए लम्बे समय तक याद रखा जायेगा। श्री अग्निहोत्री जी सदैव हमारे प्रेरणास्रोत रहेंगे। ऐसे महामानव को वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी तपोवन देहरादून के समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों, सहयोगियों और आश्रमवासियों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि एवं शत्–शत् नमन् ।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के अध्यक्ष स्व. श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी की स्मृतियों के क्षण

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में आयोजित विरक्त मंडल प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित आर्यगण

(**बांये से दांये**) : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मा. स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्व. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी, स्व. श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री (अध्यक्ष तपोवन आश्रम, देहरादून), श्री प्रेम प्रकाश शर्मा (सचिव, तपोवन आश्रम), श्री विनेश आहूजा (सदस्य, तपोवन आश्रम), श्री गोपाल कृष्ण हाण्डा (पूर्व सदस्य, तपोवन आश्रम)।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के अध्यक्ष स्व. श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी की स्मृतियों के क्षण

तपोवन के अध्यक्ष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का सार्थक जीवन

—आचार्य आशीष आर्य

वह जीवन सार्थक होता है जिससे अन्यों के जीवन में सुख बढ़े, सुसंस्कार बढ़ें, पवित्रता व सदाचरण बढ़ें। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के यशस्वी प्रधान स्मृतिशेष श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का यज्ञमय जीवन, इन सभी दृष्टियों से सार्थक रहा। उनका यज्ञ प्रेम, समर्पण, दानशीलता, सत्संग प्रेम आदि ऐसे कई विशेष गुण जो प्रकटरूप से उनके आचरण में दिखते रहे और उनके जीवन को सार्थक दिशा देते रहे।

बाल्यकाल से ही महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज के आध्यात्मिक व्यक्तित्व का उनके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। गुरूरूप में उनका वरण कर वे जीवन भर उनके द्वारा बताये गये दिशा निर्देशों पर ही चलते रहे। जिसके फलस्वरुप ही वे अग्निहोत्र व गायत्री जप को अनन्य श्रद्धा के साथ जीवन भर करते रहे। अग्निहोत्र के प्रति उनकी नियमबद्धता प्रेरणीय है। घर में व यात्राओं में भी उन्होंने बहुत अनुशासित रुप से यज्ञ किया। दैनिक यज्ञ के साथ–साथ समय–समय पर वेदपारायण यज्ञों को स्वयं घर में भी करते रहे व बड़े आयोजनों के रुप में भी समाज में अनेक बार करवाने का पुण्य भी अर्जित करते रहे। उन्होंने यज्ञ को सदा अत्यंत श्रद्धा से किया, भावनापूर्ण हृदय व विश्वास से किया।

शान्तिपाठ को उसके काव्यानुवाद ''शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में, जल में, थल में और गगन में————'' को बहुत भावपूर्ण रीति से वे गाते थे। स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के प्रति भी उनकी अनन्य श्रद्धा दृष्टिगोचर होती रही।

व्यापार के साथ–साथ संस्थाओं, आश्रमों का संचालन करना, बृहद् यज्ञायोजनों को करवाना उनके जीवन के अभिन्न अंग बने रहे। उन्होंने वैदिक धर्म व समाज की श्रद्धापूर्ण सेवा को अनवरत करने का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर अपने जीवन को सार्थक किया है।

जन्म के पश्चात् मृत्यु, संयोग के पश्चात् वियोग अपरिहार्य सत्य है। उसे हटाया नहीं जा सकता। पूर्वजों के, वयोवृद्धों के शुद्ध आदर्शों को आचरण रूप में जीवन में ग्रहण करना व उनके अधूरे कार्यों को और परिमार्जित रीति से पूरा करना भी उनका सच्चा श्राद्ध ही है। उनकी यज्ञ को जन–जन तक पहुंचाने की भावना अनुकरणीय है। आज के युग में यज्ञ का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार करने हेतु यह आवश्यक हो गया है कि यज्ञ की वैज्ञानिकता को विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षणो, प्रयोगों के माध्यम से समाज को सिद्ध करके दिखाया जाय।

आज का युवा आधुनिक विज्ञान द्वारा सिद्ध क्रियाओं, तथ्यों को बहुत आस्था से देखता है, वह हर बात को तर्क–वितर्क व प्रयोगों के माध्यम से परीक्षित कर स्वीकार करने की प्रवृत्ति रखता है और उसकी यह मानसिकता गलत भी नहीं कही जा सकती।

अतः यह यज्ञ परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले उत्तराधिकारी, पदाधिकारियों का विशेष योगदान माना जायेगा कि वे यज्ञ की वैज्ञानिकता को प्रमाणों से भी प्रमाणित कर समाज में प्रस्तुत करने की योजना बनायें व उसे क्रियान्वित भी करें। उसके बगैर अपने घरों की भी युवा पीढ़ी को दीर्घकाल तक यज्ञपरम्परा से जोड़े रखना कठिन ही प्रतीत होगा। यह सत्य यज्ञपरम्परा के संवाहक अधिकारियों से भी छिपा नहीं रहना चाहिये।

इसके साथ–साथ तर्कपूर्ण दार्शनिक

मान्यतायें ही युवा पीढ़ी को जोड़ने व प्रभावित करने में सक्षम हैं। अतार्किक दार्शनिक मान्यतायें सत्यग्राही बुद्धिजीवी वर्ग में स्वीकार होनी कठिन हैं। पुनर्जन्म व कर्म विषयक कई मान्यतायें जो आर्यजगत के भी एक वर्ग विशेष में प्रचलन में हैं उनको भी वैदिक रीति से अपनी पुस्तकों में परिमार्जित करने का यदि उत्तराधिकारीगण संकल्प लेंगे तभी अपनी नयी पीढ़ी को वे अपनी परम्परा से जोड़े रख पायेंगे अन्यथा नयी पीढ़ी का सत्य की खोज में अन्यत्र भटकना स्वाभवतः देखा जा सकेगा।

ईश्वर की न्यायपूर्ण व्यवस्था में कर्मानुसार ही अगला जन्म प्राप्त होता है। अतः मान्य श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का अर्जित पुण्य प्रताप से उत्तम अग्रिम जन्म सुनिश्चित है। वे पुनः इस धरा पर यज्ञ परम्पराओं के और विशुद्ध रीति से संवाहक व प्रेरक अवश्य बनेंगे। पुनः आगमन अवश्यम्भावी है। वियोग के पश्चात् पुनः संयोग का विचार आहलादकारी है। यह उत्साहजनक है, यही प्रेरणीय है, यही मंगलकारी है।

TRIBUTE TO NOBEL & PIOUS SOUL OF SHRI DARSHAN KUMAR AGNIHOTRI JI

-Gopal Krishna Handa, New Delhi

Sentiments may not permit me to do justice even then I am putting down few words with heavy heart.

"Darshanji, a pillar of Kukreja / Agnihotri Family, my steadfast friend, companion and confidente thro" almost 60 years, he helped build, nurture and sustain a net work of goodness all around thro several decades by bonds of commitment, compassion, generosity of spirit and heart. A totally dependable and caring friend and support to all the countless who came into his world and a passionately devoted philanthropist and support to the needy, more so Ashrams, Vidwans and many other religious organisations.

Thanks you Lord for 80 (plus) years of his life and 60 years of our togetherness.

They are not a few years, but my Lord they are not enough for me and his family and the larger family that he so committedly helped and sustain. We tried our best to hold him back thro" payers and the family using all possible resources to do the same. But who can succeed in face of Divine Will.

Oh Lord Darshanji has returned to you - his Maker. We pray that you - our Lord Almighty hold Darshanji in Heavenly abode in care and give us the strength to be always inspired by the spirit of love and generosity and compassion that he seeded in all of us and the society at large. May his soul rest in peace in the lap of the Lord. My prayers to the illustrious family of Darshanji to bear this loss and live upto his ideals.

आखिर ''याज्ञिक'' यज्ञ अग्नि में लीन हुआ

—वेद प्रकाश आर्य
मंत्री, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक

यज्ञ प्रेमी, ईश्वर भक्त एवं दानशील प्रधान वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक एवं वैदिक साधन आश्रम देहरादून 16 मई 2021 को महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज के सच्चे शिष्य बनकर और अपनी कुल परम्परा को आगे बढ़ाते आखिर यज्ञ अग्नि में लीन हो गये। भले ही परिवार में वह दर्शन कुमार कुकरेजा से जाने जाते थे परन्तु अपने माता–पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए संसार में श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री के नाम से सभी पुकारते थे। उन्होंने जीवन में परिवार की मर्यादाओं को गौरवान्वित किया और यज्ञ को जीवन का अंग बनाया।

सच्चे यज्ञ प्रेमी : श्री दर्शन जी ने कभी यज्ञ नहीं छोड़ा दोनों समय यज्ञ करना कभी नहीं छोड़ा। इस कार्य में उनकी धर्मपत्नि श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी ने जीवनभर उनका साथ निभाया। घर में यज्ञ महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज ने आरम्भ करवाया था। कितना आश्चर्य है कि पहली बार जो अग्नि यज्ञकुण्ड़ में आरम्भ की वही अग्नि पाकिस्तान से भारत में लाकर घर में स्थापित की जो निरन्तर आज तक चल रही है। बड़े चम्मच में प्रचुर मात्रा में घी, सामग्री, मेवा, गुग्गल का प्रयोग सदैव करते रहे और सुगन्धी से सारे वातावरण को सुगन्धित करते रहे। कोई बड़ा सम्मेलन हो सदैव मुख्य यज्ञमान में आपका नाम लिखा मिलता है। प्रयाग निकेतन जवाहर नगर, यज्ञ भवन जवाहर नगर तथा प्रीत विहार में जो अग्नि प्रज्वलित की वह आज भी नियमित रूप से जल रही है।

विद्वानों का सम्मान एवं सत्संग : आर्य समाज का शायद ही कोई विद्वान हो जो उनके घर पर आकर सत्संग एवं आशीर्वाद प्रदान करते थे। विद्वानों का हर प्रकार से सम्मान और आर्थिक रूप से सेवा करने में सदैव आगे रहे। स्वामी दीक्षानन्द जी के सानिध्य में कई बार बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन चारों वेदों द्वारा आपने करवाये। आपने अपनी पत्नि सरोज अग्निहोत्री जी के साथ 100–100 से अधिक बार सामवेद एवं यजुर्वेद का यज्ञ घर पर किया। कोई भी सन्यासी, साधु, विद्वान इनके घर से कभी खाली नहीं गया।

101 कुण्डीय यज्ञ की परम्परा : महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की जन्म शताब्दी के अवसर पर भारत में पहली बार 1987 में 101 कुण्ड़ीय यज्ञ का आयोजन वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक के प्रांगण में किया, जिसके संयोजक महात्मा दयानन्द जी थे। इस अवसर पर हजारों आर्यजनों ने पधार कर आहूती डाली। आप महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज के सच्चे शिष्य थे।

साहित्य प्रेमी : महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज द्वारा रचित लगभग 75 पुस्तकों का पुनः प्रकाशन तथा प्रचार–प्रसार में आपका योगदान सदैव याद किया जायेगा। गायत्री रहस्य, यज्ञ रहस्य, गृहस्थ सुधार इत्यादि पुस्तकें अनेकों बार अपनी ओर से छपवा कर आप निशुल्क बांटा करते थे।

यज्ञ योग ज्योति पत्रिका : पत्रिका के प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी लेते हुए अन्तिम समय तक प्रकाशित करते रहे। पत्रिका में यदि पैसे का अभाव होता तो अपनी ओर से खुशी से धन लगा

देते थे। उनका विचार था कि महाराज जी के विचार पत्रिका के माध्यम से जन–जन तक अवश्य ही पहुँचे।

कुशल प्रशासक : वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक, वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून, कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, गुरुकुल एटा, आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ तथा दीक्षानन्द जी की समपर्ण शोध संस्थान साहिबाबाद आपके कुशल संचालन से आज भी यह संस्थायें उत्तम व्यवस्था से चल रही है। सभी संस्थाओं और अनेक प्रकार के सामाजिक कार्य, गौशाला, स्कूल, अस्पताल, गुरुकुलों का संचालन उन्होंने अग्निहोत्र ट्रस्ट के माध्यम से किया जो कि सभी आर्यजनों के लिए दर्शनीय है।

दानवीर : पिता स्व0 गणेश दास तथा माता शान्ति अग्निहोत्री जी की प्रेरणा से सदैव लाखों–लाखों रुपये दान देना, सहयोग करना उनकी दिनचर्या थी। देहरादून आश्रम, रोहतक आश्रम का कायाकल्प अपने जीवन काल में करके उन्हें सुन्दर आकर्षक रुप देकर कायाकल्प किया और दर्शनीय रुप दिया। गुरुकुलों तथा आर्य महासम्मेलनों पर लाखों–लाखों रुपयों का दान देकर उत्साह वर्धन उनकी विषेशता रही है। गुरुकुल गौतम नगर देहली, ऐटा, टंकारा, रोजड़, कन्या गुरुकुल देहरादून, दर्शन योग महाविद्यालय, कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, गुरुकुल प्रभात आश्रम, पाणनीय महाविद्यालय वाराणसी, व्यास आश्रम हरिद्वार इत्यादि संस्थाओं में निरन्तर दान दिया जाना उनकी दानवीरता का परिचय देता है।

आज सभी संस्थाएं, आश्रम, गुरुकुल उनकी स्मृतियों को सदैव अपने साथ रखते हुए उनके प्रति कृतज्ञ है। वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक द्वारा विशेष श्रद्धांजली सभा का आयोजन 23–5–21 का महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया में किया गया तथा श्रद्धा रूपी पुष्प अर्पित किये गए। हम आशा करते हैं कि उनके परिवार जन उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में सहयोग करते रहेंगे। मुझे लगभग 30 वर्षों से उनके साथ मन्त्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। उनका जीवन विनम्र, त्यागमय, यज्ञमय एवं परोपकार से भरा था जो कि सदैव हमें प्रेरणा देता रहेगा।

मनुष्य के शत्रु व उनके उपचार

मनुष्य का शरीर शत्रुओं से घिरा हुआ है। प्राण, इन्द्रियां, मन, बुद्धि और आत्मा सब शत्रुओं से घिरे हुए हैं। सब की निवृत्ति का उपाय औषधि नियत है।

1.	शरीर के शत्रु	–	सदी, गर्मी, व्याधियां, रोग
2.	प्राण के शत्रु	–	भूख–प्यास
3.	इन्द्रियों के शत्रु	–	विषय–रस, रूप, राग, गन्ध, स्पर्श
4.	मन के शत्रु	–	काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार
5.	बुद्धि के शत्रु	–	अज्ञान, राग, द्वेष
6.	आत्मा के शत्रु	–	अविद्या, असत्यता
7.	आध्यात्मिक शत्रु	–	बाहर विषय, अन्दर कामनाएं

उपाय क्रमशः इस प्रकार हैं –

1. संयम, 2. संयम, 3. प्रत्याहार, 4. प्राणायाम, 5. स्वाध्याय, 6 व 7. ईश्वर शरणागत होना।

– महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

यादों के झरोखे से

यज्ञनिष्ठ उद्योगपति श्री दर्शन अग्निहोत्री जी

– डॉ. अनिल आर्य

हजारों साल तक नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से पैदा होता है चमन में दीदावर ऐसा

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के प्रधान श्री दर्शन अग्निहोत्री जी का निधन आर्य जगत की गहरी क्षति है। आप यज्ञप्रेमी, दानवीर मिलनसार व्यक्तित्व के धनी रहे। साथ ही सफल उद्योगपति के रूप में भी आपने यश कीर्ति अर्जित की। गुरूकुलों के लिये आपके मन में अपार प्रेम व श्रद्धा रही। आप मुक्त हस्त से गुरूकुलों व ऋषि लंगरों के लिये सदैव दान करते रहे।

मेरा अग्निहोत्री परिवार से परिचय 1970 के आसपास अपनी पूज्य माता श्रीमती पुष्पा देवी सपरा जी के साथ प्रयाग निकेतन, जवाहर नगर, दिल्ली में यज्ञ–संत्सगों में जाने से हुआ। आदरणीय माता शान्तिदेवी जी व महात्मा गणेशदास जी अग्निहोत्री बड़े ही श्रद्धा भाव से यज्ञ रचाते रहे, जिसमें धर्मप्रेमी आर्य जन दूर–दूर से भाग लेने आते थे। आपके परिवार से प्रेरणा लेकर अनेकों परिवारों ने दैनिक यज्ञ का संकल्प लिया था।

जब आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी का निधन हुआ तो आपने संस्कार की सारी व्यवस्था की ओर प्रतिवर्ष उनका स्मृति दिवस मनाने की परम्परा बनायी व अन्त तक निभाई। इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वानों, भजनोपदेशकों का अभिनन्दन करने की परम्परा भी स्थापित की। दिल्ली के अतिरिक्त तपोवन आश्रम, देहरादून व गुरूकुल चोटीपुरा, अमरोहा में भी सफल आयोजन किये। इसके साथ ही आपका जुड़ाव गुरूकुल गौतम नगर, दिल्ली, वैदिक भक्ति आश्रम, रोहतक व गुरूकुल एटा से भी रहा।

श्री दर्शन अग्निहोत्री जी ने अपनी यज्ञ की पैतृक परम्परा को जो पाकिस्तान से आयी थी अन्त समय तक बनाये रखा। आज आपके समर्पित जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है कि निष्काम सेवा कैसे की जाती है उसका सफल उदाहरण आप रहे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रति आपका विशेष लगाव था, अनेकों समस्याये आयी लेकिन आप चट्टान की तरह सदैव डटे रहे व सहयोग समर्थन मुक्त हस्त से प्रदान करते रहे।

इतनी लम्बी यात्रा की अनेकों स्मृतियां दिल में विद्यमान है जो कागज के चन्द पन्नों में नहीं आ सकती। मैं आपकी स्मृति को नमन करता हूँ।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून उनकी स्मृति में एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है, मैं उसके सफल प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

श्रद्धावनत्

राष्ट्रीय अध्यक्ष,
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली–110007
सम्पर्कः 9810117464

स्वर्गीय श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री

अध्यक्ष वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी देहरादून

—पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ

मृदुभाषी एवं ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री के असामयिक स्वर्गवास होने का समाचार, आचार्य पीयुष शास्त्री एवं श्री मनमोहन जी से पाकर मैं हतप्रभ रह गया। सोचने लगा, परमात्मा पुण्यात्मा अच्छे पुरुषों को जल्दी क्यों बुला लेता है?

अग्निहोत्री जी ईश्वर ज्ञान वेद के ''कुर्वन्नेह कर्माणी जिजीविशेच्छतं समाः अर्थात् हे मनुष्य तू शुभ कर्म करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा कर'' उपदेश को साकार करते हुए श्री अग्निहोत्री जी अपने जीवन में एक से एक बढ़कर सफलतायें एवं यश प्राप्त कर रहे थे—वे वैदिक धर्म प्रचार—प्रसार के भारत प्रसिद्ध केन्द्र ''वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून, महात्मा प्रभु आश्रित आश्रम, रोहतक, आर्ष गुरुकुल एटा के कई वर्षों से अध्यक्ष पद और न जाने कितने गुरुकुलों की प्रबन्ध समितियों के सदस्य एवं संरक्षक थे।

विद्वानों का सत्कार करना एवं दान—दक्षिणा देना उनकी प्रकृति थी। स्वभाव से वे सौम्य, शान्त एवं सरलचित थे। क्रोधित होते हुए उन्हें कभी देखा नहीं।

वे एवं उनकी स्व0 धर्मपत्नी श्रीमती सरोज अग्निहोत्री दोनों ही यज्ञ प्रेमी थे। देवयज्ञ तो उनके यहाँ प्रतिदिन होता ही था, लेकिन वे दोनों चारों वेदों के कई पारायण यज्ञों के भी साधक थे। उनके घर में पुष्पों से भरी हरियाली वाटिका में सुन्दर यज्ञशाला का भी निर्माण है। लेखक को एक बार उनके घर प्रवास के अवसर पर उस यज्ञशाला में उनके साथ बैठकर यज्ञ करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

मैंने उनके जीवन में धन एवं धर्म का अद्भुत सामंजस्य देखा था। वे एक सफल उद्योगपति थे, इसलिए धन की कमी नहीं थी, लेकिन धन को उन्होंने धर्म के नियंत्रण में रखा। वे हस्त से प्रसन्नतापूर्वक आर्य विद्वानों, निर्धनों, सन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी, आचार्यों, संस्थाओं, गुरुकुलों, आर्य समाजों आदि को दान दिया करते थे। परोपकार करना ही उनका जीवन था। यथार्थ में वे धर्मतत्व को जानते थे।

वे स्वाध्यायशील व्यक्तियों को महात्मा प्रभु आश्रित एवं महात्मा आनन्द स्वामी द्वारा लिखित वैदिक साहित्य निःशुल्क बाँटा करते थे। वे विद्या प्रेमी थे।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन उनकी मुख्य कर्मभूमि था। उसका जो आज बहुमुखी विकास है, उसमें उनका और उनके सहयोगी मन्त्री ई0 प्रेम प्रकाश शर्मा का विशेष योगदान है। तपोवन के हर कार्यक्रम में वे अपनी धर्मपत्नी सहित दिल्ली से वहां आते थे। तपोवन के पश्चिम एवं दक्षिण कोने स्थित उनका आवास सदैव विद्वानों की चहल—पहल से शोभित होता रहता था। यज्ञ कार्यक्रम के बाद सभी सन्यासी एवं विद्वान वहीं बैठकर जलपान किया करते थे।

वे एवं उनका प्रिय सेवक रामू किस श्रद्धा के साथ जलपान सामिग्री प्रस्तुत करते थे, मेरे पास उस श्रद्धा को व्यक्त करने के लिए, शब्द नहीं हैं। वे मानव नहीं देवपुरुष थे।

यज्ञ कार्यक्रम में वे ही अपनी धर्मपत्नी सहित मुख्य यजमान हुआ करते थे। श्री वेद प्रकाश

मिगंलानी सदैव उनके साथ रहते थे। पीत वस्त्रों में यज्ञवेदी पर सभी शोभायमान होते थे।

उनके दो पुत्र एवं एक पुत्री हैं। परमात्मा उन्हें सुखी रखे। सन्तान के लिए माता–पिता की कभी मृत्यु नहीं होती। वे सदैव हृदय में वास करते हैं। उनकी स्मृतियां सदैव शुभ कर्मों की प्रेरणा देती रहती हैं। वे सदैव अपने माता–पिता के यश की रक्षा करते रहें एवं तपोवन आश्रम को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। ईश्वरीय व्यवस्था अटल है, उसे कोई चुनौती नहीं दे सकता।

उस देवपुरुष को मेरा अन्तिम प्रणाम। यही मेरी श्रद्धांजली है।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्रद्धेय स्वर्गीय
श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी
को शत्–शत् नमन

–विनेश आहूजा

चल ऐ नजीर इस तरह से कारवां के साथ
जब तू न चल सके तो तेरी दास्तां चले।

मेरे भ्राता समान मित्र श्री दर्शन जी मृदुभाषी और सौम्य प्रकृति के स्वामी थे। उनका हृदय बहुत विशाल था और उनमें परोपकार तथा लोक–कल्याण की भावना कुट–कूट कर भरी हुई थी। वे यज्ञ से जुड़ी गतिविधियों के प्रति पूर्णतया समर्पित थे।

मेरे आदर्श व अनुकरणीय व्यक्तित्व के स्वामी भाई स्वर्गीय दर्शन जी जिस भी संस्था से जुड़े वह संस्था धन्य हो गई। मैं लगभग 1660–65 से स्वर्गीय माता शांतिदेवी जी के सम्पर्क में उनके निवास स्थान प्रयाग निकेतन जवाहर नगर दिल्ली में परम पूजनीय प्रभु आश्रित जी के कार्यक्रम में जुड़ा था और उसके बाद मेरे मित्र वेद मिगलानी जी के सानिध्य के द्वारा हमारी घनिष्ठता बढ़ती गई। मुझे व मेरी पत्नी रचना आहूजा को स्वर्गीय भाभी जी श्रीमती सरोज अग्निहोत्री जी व स्वर्गीय दर्शन अग्निहोत्री जी से जो स्नेह, मान सम्मान प्राप्त हुआ वह अवर्चनीय है। मैं ऐसी पुण्यात्मा के लिए ईश्वर से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करता हूँ। आप सदैव हमारी पुण्य स्मृतियों में जीवित रहेंगे क्योंकि कहा भी गया है–कीर्तिः यस्य सः जीवति। आप सदैव हम सबके बीच याद किये जाते रहेंगे।

स्वर्गीय दर्शन कुमार अग्निहोत्री

आर्यत्व, दान–वृत्ति तथा आर्य–धर्म–रक्षक, यज्ञ–योग–प्रेमी, के रूप में

एक प्रेरक व्यक्तित्व

–डॉ0 राजवीर सिंह शास्त्री

स्वर्गीय दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी आर्य समाज के एक कर्मठ योद्धा, महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, धर्म और अध्यात्म की रक्षा में निरंतर समर्पित और नित्य यज्ञ करने वाले उत्तम आर्य सज्जन थे।

उनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के अनुरूप व्यतीत हुआ और अपने पूरे परिवार को भी इसी मार्ग का अनुयायी बनाए रखा, अग्निहोत्री जी के माताजी और पिताजी भी वैदिक सिद्धांतों के अनुरूप अपने जीवन का यापन करते रहे।

दर्शन कुमार जी सौम्य, सुशील, उदार हृदय और दानशील वृत्ति के सज्जन थे, अनेक गुरुकुलों में यज्ञ शालाओं के निर्माण का पुनीत कार्य अग्निहोत्री परिवार द्वारा संपन्न कराया गया है। कोई भी आर्य सन्यासी, विद्वान और आचार्य जब भी दर्शन कुमार अग्निहोत्री के परिवार में गया तो उसे गुरुकुल, आश्रम और आर्य समाज के कार्यों के लिए दान स्वरूप धनराशि अवश्य प्रदान की। दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी के परिवार में दशकों से हवन कुंड में प्रज्वलित अग्नि संरक्षित है, महात्मा प्रभु आश्रित जी जैसे दिव्य साधक और योगाभ्यासी विद्वानों का इस परिवार पर सदा ही आशीर्वाद और अनुकंपा रही है। श्री अग्नहोत्री जी से मुझे भी कई बार मिलने का अवसर प्राप्त हुआ मैंने शोध कार्य के प्रसंग में उनका साक्षात्कार भी लिया था और उस साक्षात्कार के अंशों का मैंने लेखन भी किया था।

अग्निहोत्री जी ने अपने जीवन में आर्य समाज की संस्थाओं की उन्नति के लिए प्रशंसनीय और अनुकरणीय कार्य किए हैं। 2 वर्ष पूर्व गार्गी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चामड़ भयां के संस्थापक स्वामी चैतन्य देव वैश्वानर को मिलाने के लिए मैं दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी के घर गया था, तब उनके वृक्क (किड़नी) की चिकित्सा हो चुकी थी और उस शारीरिक कष्ट के समय में भी वह अपने कक्ष से उठकर ड्राइंग रूम में आयए और हमारे साथ बैठे और स्वामी चैत्न्य देव वैश्वानर को कन्या गुरुकुल की सहायता के लिए दान राशि भी समर्पित की थी।

ऐसे समर्पित आर्य महानुभाव का दिवंगत हो जाना आर्य समाज के लिए एक दुखद और अपूरणीय क्षति है, परंतु विधि का विधान है कि जन्म और मृत्यु के इस प्रवाह से सबको गुजरना पड़ता है। मैं दिवगंत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ की ऐसी विशष्ट आत्मा को वैदिक धर्म की रक्षा के लिए निरंतर उन्नति की ओर प्रेषित करते हुए वेद और अध्यात्म की रक्षा में नियुक्त करते रहें। विनम्र भाव सहित।

– स्वामी वेदानन्द सरस्वती (निधन 12-6-2021) को श्रद्धांजलि –

आत्मा को मनुष्य की योनि मिलना परमात्मा की दया तथा कृपा का परिणाम है : वेदानन्द सरस्वती

–मनमोहन कुमार आर्य

(वेदों के उच्च कोटि के विद्वान एवं योग साधक व उपासक स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तरकाशी का दिनांक 12–6–2021 को निधन हो गया। उनकी निधन आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति है। वैदिक साधन आश्रम तपोवन स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। उनको श्रद्धांजलि स्वरूप उनका वैदिक साधन आश्रम तपोवन में दिनांक 19–10–2019 को दिया गया एक उपदेश व उसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।)

–सम्पादक, पवमान

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के अक्टूबर, 2019 में आयोजित शरदुत्सव के चौथे दिन दिनांक 19–10–2019 को प्रातः 7.00 बजे से यज्ञ, भजन एवं सत्संग का आयोजन आश्रम की 3 किमी0 दूर पर्वतीय स्थान पर वनों से आच्छादित ईकाई के परिसर में सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस स्थान पर आर्यसमाज के शीर्ष संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महात्मा प्रभु आश्रित, महात्मा दयानन्द, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती आदि अनेक योग साधको ने तप व साधना कर आध्यात्मिक उन्नति का लाभ प्राप्त किया है। प्रातः सामवेद पारायण यज्ञ आर्यजगत के शीर्ष विद्वान एवं गीतकार पं0 सत्यपाल पथिक जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में गुरुकुल पौंधा के दो ब्रह्मचारियों ने मन्त्रपाठ किया। देश के अनेक स्थानो ंसे आये वैदिक धर्म एवं संस्कृति के अनुरागी दम्पतियों व परिवारों में इस आयोजन की शोभा को बढ़ाया। आर्यजगत के शीर्ष विद्वान पं0 उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, स्वामी वेदानन्द सरस्वती उत्तरकाशी, डा0 आचार्य धनंजय, ओजस्वी वक्ता पं0 शैलेश मुनि सत्यार्थी जी, भजनोपदेशक श्री रुहेलसिंह आर्य, श्री आजादसिंह लहरी, श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री, श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी, पं0 सूरतराम आदि ने इस आयोजन की शोभा को बढ़ाया एवं इसमें चार चांद लगाये।

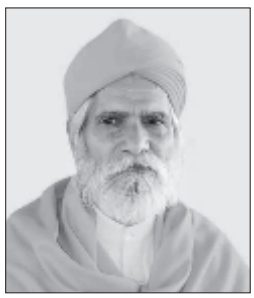

आयोजन में उत्तरकाशी से पधारे विद्वान स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में परमात्मा तथा आत्मा शब्दों की चर्चा की। स्वामी जी ने कहा कि वृक्षों एवं वनस्पतियों में भी जीव होता है। उनके अनुसार जगत की रचना में ईश्वर सहित प्रकृति का भी योगदान है। प्रकृति

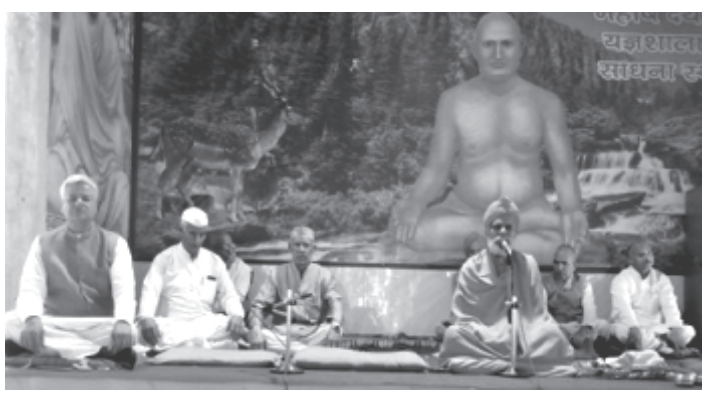

को उन्होंने जड़ बताया। उन्होंने कहा कि प्रकृति में ज्ञान गुण नहीं है। आत्मा और परमात्मा ज्ञान से युक्त सत्तायें हैं। आत्मा अल्पज्ञ है। इसके ज्ञान की सीमायें हैं। मनुष्य के पास ज्ञान होता है जिसे वह प्रयत्न व पुरुषार्थ से बढ़ा सकता है। परमात्मा की संगति से जीवात्मा के ज्ञान में वृद्धि होती है और यह मुक्ति तक पहुंच जाता है। स्वामी जी ने कहा कि आत्मा तीन प्रकार के बन्धनों में बंधा हुआ है। आत्मा को मनुष्य की योनि मिलना परमात्मा की दया तथा कृपा का परिणाम है। उन्होंने कहा कि यह निश्चित नहीं है कि हमारा अगला जन्म भी मनुष्य योनि में ही होगा। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य का आत्मा सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर तथा कारण शरीर में बंधा हुआ है। मनुष्य के सूक्ष्म शरीर में 18 तत्वों का समावेश है। स्वामी जी ने आगे कहा कि सूक्ष्म शरीर में अहंकार तथा चित्त के संस्कार होते हैं। इसी से मनुष्य को जन्म मिलता है।

स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य के शरीर और ईश्वरीय ज्ञान वेद की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि मृत्यु या हत्या आदि होने पर भी आत्मा अभाव रूपी नाश को प्राप्त नहीं होता। स्वामी जी ने कहा कि जो मनुष्य अपनी आत्मा को देख लेता या साक्षात्कार कर लेता है उसे स्वामी कहते हैं। उन्होंने कहा कि संसार की सबसे बड़ी चीज ज्ञान है। स्वामी जी ने कहा कि धर्म प्रजा की रक्षा करता है। धर्म मनुष्य व उसके जीवन की रक्षा भी करता है। धर्म के पालन से ही राष्ट्र की रक्षा होती है। वैदिक विद्वान स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी ने धर्म के दस लक्षण धैर्य, क्षमा, इन्द्रियों का दमन, अस्तेय तथा शौच आदि भी श्रोताओं को बताये। उन्होंने कहा कि धर्म के चार चरण सत्य, दया, दान तथा परिश्रम होते हैं। स्वामी जी ने यह भी बताया कि झूठ बोलने वाले व्यक्ति को यज्ञ का फल नहीं मिलेगा। स्वामी जी ने दान का उल्लेख किया और कहा कि सबको दूसरों को निःशुल्क विद्या का दान देना चाहिये। स्वामी जी ने कहा कि विद्वान शिष्यों को पढ़ायें और उन्हें विषय को खोल–खोल कर पढ़ाये। स्वामी जी ने यह भी कहा कि वेदों के ज्ञानी को ही ब्राह्मण कहना सार्थक होता है। ब्राह्मण का मुख्य कर्तव्य विद्या का दान करना होता है। वेदों के विद्वान स्वामी जी ने श्रोताओं को कहा कि अपने सम्पर्क में आने वालों को अभय दान दो। स्वामी जी ने हरियाणा के एक पिता–पुत्र के विवाद को सुलझाने का प्रकरण भी प्रस्तुत किया। पिता द्वारा पुत्र के पास जाकर अपनी गलती स्वीकार कर लेने के बाद दोनों में परस्पर पूर्ववत् सौहार्द स्थापित हो गया था। स्वामी जी ने कहा कि यम और नियमों का पालन करने से अपना जीवन अच्छा बनता है और दूसरों को भी लाभ होता है। वैदिक विद्वान स्वामी वेदानन्द जी ने कहा कि वेद के अनुसार 10 माह का गर्भकाल पूर्ण होने पर बच्चा जन्म लेता है। इसको उन्होंने अनेक उदाहरण देकर प्रमाणित किया। इसके साथ ही स्वामी जी का प्रवचन समाप्त हो गया।

यज्ञ के ब्रह्मा पं0 सत्यपाल पथिक जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि सबको यज्ञ करना व कराना आना चाहिये। कहीं किसी संस्कार के अवसर पर यदि पुरोहित जी न हों तो वहां उपस्थित आर्यसमाज के सदस्यों को स्वयं ही पुरोहित के कार्य को सम्पन्न कर देना चाहिये। पथिक जी ने हैदराबाद के आर्यसमाज के इतिहास पुरुष बंसीलाल जी के विवाह की घटना का स्मरण कराया। इस आयोजन में कन्यापक्ष ने पौराणिक पुरोहितों को बुलाया था। आर्यसमाज के पुरोहित की अनुपस्थिति में बंसीलाल जी ने संस्कार विधि की दो प्रतियां मंगाईं और कन्या व वर ने उसके आधार पर अपने अपने मन्त्रों का पाठ कर पूर्ण वैदिक रीति से विवाह संस्कार को सम्पन्न कराया। मूर्धन्य विद्वान एवं भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी ने कहा कि आर्यसमाज के सदस्यों को संस्कार विषयक किसी भी आवश्यकता की पूर्ति के लिये तत्पर रहना चाहिये।

आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने कहा कि वह सन् 1950 से पहले से इस तपोभूमि से परिचित हैं। उन दिनों वह बच्चे थे और अपने माता–पिता के साथ यहां आया करते थे। उन्होंने बताया कि यहां आने के लिये रास्ता नहीं होता था। हमें झाड़ियों को हटाना पड़ता था और सर्प आदि विषैले जन्तुओं का भी खतरा होता था। उन्होंने बताया कि तपोभूमि के इस स्थान पर महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती तथा प्रभु आश्रित जी महाराज आदि योग साधकों ने तप किया है। इनके बाद महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी एवं अन्य योगाभ्यासी भी यहां साधना रूपी तप करते रहे हैं और साधना से उन्हें हुए लाभों को वह बताते रहे हैं। श्री अग्निहोत्री जी ने कहा कि इस तपोभूमि में आना हम सबका सौभाग्य है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आप सब लोग भविष्य में भी इस स्थान पर आकर साधना करके लाभ उठायेंगे। प्रधान श्री अग्निहोत्री जी ने कहा कि मैं आशा करता हूं आप को इस स्थान पर यज्ञ व ध्यान साधना से लाभ हुआ होगा। उन्होंने सभी विद्वानों एवं अतिथियों का स्वागत किया और सबको धन्यवाद दिया।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम

तपोवन, नालापानी, देहरादून का

शरदुत्सव

बुद्धवार, 20 अक्टूबर 2021 से रविवार, 24 अक्टूबर 2021 तक

आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(1825–1883)

नोटः उत्सव का उपरोक्त कार्यक्रम कोविड महामारी के कारण परिवर्तित/निरस्त भी किया जा सकता है। शरदुत्सव के निरस्त होने की स्थिति में आवश्यक सूचना सितम्बर माह की पवमान पत्रिका तथा इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के द्वारा प्रेषित करने का प्रयास किया जायेगा। आप भी आवश्यक जानकारी वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के दूरभाष संख्या 0135–278001 तथा 7895978734 से सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।

हनुमान जी की अनन्य निष्ठा एवं हृदय–दर्शन

–ईश्वरी प्रसाद प्रेम

इस पुण्य अवसर पर विप्रों और ऋषि–मुनियों को विपुल दान–दक्षिणा देने के पश्चात् महर्षि वशिष्ठ की अनुमति से श्री राम ने लंकेश विभीषण, वानर–राष्ट्र के अधिपति सुग्रीव, निषादराज गुह, युवराज अंगद, जाम्बवन, नल–नील और अन्य माण्डलिक राजाओं को पुष्कल रत्नाभूषण एवं मूल्यवान् वस्त्रादि भेट किये। अपने आत्म–स्वरूप हनुमान को वे क्या भेंट करें, वे यह ठीक से सोच नहीं पा रहे थे कि इसी बीच माता सीता के अन्जनीकुमार के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्वयं अपना अमूल्य रत्न–जडित कण्ठहार हनुमान जी के गले में डाल दिया। सभा–मण्डप हर्ष ध्वनि और जय घोषों से गूँज उठा। पर यह क्या? सबके देखते–देखते हनुमान जी ने वह कण्ठहार उतार लिया और सभी के आश्चर्य और कौतूहल को चरम बिन्दु तक ले जाते हुए वे एक–एक रत्न को तोड़ कर भीतर कुछ देखते और उसे तुरन्त ही सभा मण्डप में फेंक देते।

पवन कुमार के इस विचित्र व्यवहार से माँ सीता के तो कष्ट की सीमा न रही। व्यथा भरे हृदय से सीताजी ने पूछा–''पुत्र! क्यों क्या हुआ?

''माँ, तुम्हारा यों आश्चर्य में डूबना और व्यथित होना अस्वाभाविक नहीं है। मैं आपके अन्तर के कष्ट को देख पा रहा हूँ, माँ! पर मैं विवश हूँ, मेरे निकट आपका यह अमूल्य उपहार एक निरर्थक वस्तु से अधिक नहीं। यह मेरे कण्ठ का भूषण नहीं, दूषण है, माँ!'' हनुमान ने बडी ही रससनी किन्तु मर्म भरी वाणी में कहा। ''तो वत्स! उसे किसी को दे ही देना था। आखिर तुम इन रत्नों को एक–एक तोड़ते हो, क्या देखते हो इनमें और क्यों फेंक देते हो, इन्हें।'' सीता जी ने उसी व्यथित स्वर में पुनः प्रश्न किया।

''माता! मैं इनको तोड़कर देखता हूँ कि इनमें से किसी में भी राम अंकित है या नहीं। राम का अर्थ है मेरे निकट–राष्ट्र, राम का अर्थ है मानवता, राम का अर्थ है मूर्तिमान् वैदिक संस्कृति और राम का अर्थ मूर्तिमान् धर्म–''रामो विग्रहहवान धर्मः'' क्या आप नहीं देख रही हैं माता! आज सम्पूर्ण राष्ट्र राम–मय है, संस्कृति मय है, और है धर्म मय।'' अपने निवेदन को जारी रखते हुए हनुमान् जी कह रहे थे–और मेरे महान् राम हैं–राष्ट्रमय!

''मातः! मुझे पवित्र वेद का एक मन्त्रांश याद आ रहा है– 'त्वं यज्ञेशु ईड्यः' यज्ञों में तू ही पूजनीय है, यज्ञों के द्वारा हम तेरी ही पूजा करते हैं, हमारा प्रत्येक कर्म तेरी ही पूजा हो। ऐसा तभी होता है जब हमारे हर आचार, व्यवहार, रीति–नीति, रहन–सहन, आहार–विहार सभी कुछ जन सेवार्थ ही होता है। न केवल भौतिक वस्तुओं का वरन् हमारे मन, मस्तिष्क, पूजा–उपासना और जीवन की सम्पूर्ण मान्यताओं का भी जब राष्ट्रियकरण होता है, हम वही सोचेगें, वही बोलेंगे, वही करेंगे, वही खायेंगे वही पहिनेंगे, उसी पूजा–पद्धति को अपनायेंगे और उसी आजीविका साधन को ग्रहण करेंगे जो हमारे राष्ट्र का गौरव बढाये, जिसके द्वारा राष्ट्रवासियों की सेवा हो, जन–जन का कल्याण हो। यही है जीवन की यज्ञ–मयता, यही है धर्म–मयता, यही है ईश्वर–मयता और यही है राष्ट्र–मयता। भगवान् राम इस आदर्श पालन में सबसे आगे हैं इसी से ''राम'', यह शब्द राष्ट्र का पर्याय बन गया है, आज। इसी लिए राम–भक्ति का अर्थ है राष्ट्र–भक्ति, मानव–भक्ति, मानवता भक्ति।''

''मात! मैंने इन रत्न कणों में राम को नहीं पाया। अर्थात् अपने राष्ट्र को नही पाया। राष्ट्र की आत्मा को नहीं पाया। शायद अब भी मेरी बात स्पष्ट न हो। माँ, मेरा आशय है–राष्ट्र की आत्मा

है उसके प्रजां जन। जब तक मेरा प्रत्येक राष्ट्र बन्धु इतना धन–धान्य सम्पन्न न हो जावे कि वह इसी प्रकार के रत्नों का हार धारण कर सके, मुझे इस रत्नहार को ग्रहण करने का अधिकार नहीं। अतः इसकी निरर्थकता स्वयं सिद्ध है। जब तक राम–राज्य का एक भी व्यक्ति सन्तप्त है, किसी एक भी आँख में आँसू हैं, राष्ट्र के किसी भी कोने में कहीं भी अज्ञान, अन्याय या आभाव से उत्पन्न कराह है, टीस है, दर्द है, वेदना है, मेरी राम भक्ति अधूरी है।

''माँ, आपकी भेंट की अवमानना का साहस मुझ में कहाँ? आपके स्नेह के एक–एक कण से ही तो इस शरीर का रोम–रोम निर्मित है। अतः मां अशीर्वाद दो कि इन रत्नों के फेंके हुए दाने राम–राज्य की खेती बन जायें। यहां का हर घर रत्न–राशि से आपूर हो, यहाँ का हर व्यक्ति आपके द्वारा पुरस्कृत रत्नहार को धारण कर सकने की क्षमता रख सके। माँ उसी दिन आपका यह पुत्र रत्न हार को धारण करेगा और उसी दिन इन रत्न कणों को तोड़ कर इनमें राम–दर्शन का मेरा अर्थ और अभिप्राय पूर्ण होगा। तो अब मेरे शेष जीवन का मिशन राम–राज्य को इतना समृद्ध, इतना सुखी और आदर्श बनाना होगा, जिससे यह वैदिक सांस्कृतिक सम्राज्य यह 'राम–राज्य ईश्वरीय राज्य का, दैवी राज्य का, आदर्श राज्य का प्रतीक या प्रर्याय बन जावे। तभी मैं समझूंगा कि स्नेहशीला माता अन्जना और पू0 पितृदेव की तपस्या फलवती हुई और.....और हनुमान् जी का गला भर आया, नेत्रों में प्रेमाश्रु छलक आये। कुछ रुक कर ही वे कह सके–और मेरे जीवन–दाता, वैदिक सांस्कृतिक सम्राज्य के निर्माता गुरुदेव महामुनि अगस्त्य और हाँ महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र की जीवन–साधना भी तभी सिद्ध होगी। और तभी होगी महाराज राम के ''अश्वमेध यज्ञ'' की पूर्णाहुति।''

उनके अन्तिम शब्द थे–''माँ, मुझे और कुछ, इने–गिने मित्रों को राम राज्य का निर्माता कहा गया। पर राम राज्य के निर्माता तो हैं, हमारे वे शत सहस्त्र अज्ञात नरवीर जो बलिदान हो गये। हमारे राम राज्य के निर्माता हैं, हमारे महावीर यशस्वी सैनिक और आर्य राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रजा। हमें मन्दिर का कलश दीखता है पर जिस नही ंके पत्थर के अमर किन्तु अनजाने बलिदानों के सहारे वह गर्वोन्नत खड़ा है, उसे सामान्यतः हमारी दृष्टि देख नहीं पाती। आयें, हम आज के इस महा महोत्सव में अपने उन वीरों का स्मरण करें, उनके चरणों में श्रद्धा–पुष्प चढावें और कवि के शब्दों में कहें–

''गड़ गये जो नींव उन पत्थरों को,
याद करलें जो नहीं देते दिखाई।''

''माँ अब मुझे कुछ कहना नहीं है। आशीर्वाद दो माँ, मैं जन–जन में मेरे राम के दर्शन कर सकूँ–ऐसी ही पूजा, ऐसी ही मेरी उपासना!''

यह कहते–कहते महावीर हनुमान ने माता सीता के चरण पकड़ लिए और सभी ने देखा–भगवान् राम ने अपने प्रलम्बित भुजाओं में महावीर को बाँध कर हृदय से लगा लिया राम और हनुमान जैसे एकाकार हो गये। राम के विशाल व्यक्तिव में जैसे महावीर ने अपने को विलीन कर दिया हो।

महावीर हनुमान ने अपने उपरोक्त शब्दों में अपना हृदय उडेल(चीर कर) कर रख दिया था। और सभी ने देखा कि उस दिव्यात्मा के रोम–रोम में केवल राम बसा था, केवल राष्ट्र बसा था। मानवता बसी थी, राष्ट्र के कोटि–कोटि प्रजा–जन वहां थे। हनुमान का हृदय–दर्शन युग–युग तक राम और राष्ट्र को, धर्म और देश को, अध्यात्म और भौतिकता को तथा लोक और परलोक को भिन्न और परस्पर विरोधी मानने वालों का मार्ग दर्शन करता रहेगा।

सभा विसर्जन के पूर्व सभी एक स्वर से जयघोष कर रहे थे–

राजा रामचन्द्र की जय! पर तभी सबने देखा, सुना और अनुसरण किया–श्रीराम स्वयं उद्घोष कर रहे थे–

जय हनुमान! जय महावीर!! जय बज्रंगी!!!

नेपथ्य में गुंजित था–''वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।''

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून की ओर से आर्यसमाज की दिवंगत विभूतियों को विनम्र श्रद्धांजलि

1. **स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी**, उत्तरकाशी	निधन : 12–6–2021
2. **श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी**, वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून, वैदिक भक्ति साधना आश्रम रोहतक तथा आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ के मन्त्री	निधन : 16–5–2021
3. **आचार्य रामदेव जी,** टनकपुर उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड	निधन : 16–5–2021
4. **आचार्य घनश्याम जी** आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान अजमेर के आचार्य	निधन : 15–5–2021
5. **श्री रासा सिंह रावत** अजमेर लोकसभा क्षेत्र से 5 बार सांसद रहे आर्यनेता	निधन : 10–5–2021
6. **प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री** गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति	निधन : 4–5–2021
7. **आचार्य बुद्धदेव जी** गुरुकुल नृसिंहनाथ, ओडिशा	निधन : 29–4–2021
8. **आचार्या डॉ. सीमा जी** पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़	निधन : 29–4–2021
9. **श्री ओम् प्रकाश वर्मा**, आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं शास्त्रीय संगीतज्ञ, यमुनानगर–हरियाणा	निधन : 25–4–2021
10. **श्री दिनेश दत्त आर्य**, प्रसिद्ध भजनोपदेशक गाजियाबाद	निधन : 24–4–2021
11. **डॉ. राज बुद्धिराजा**, भगिनी श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री	निधनः 21–4–2021
12. **श्री प्रमोद कुमार शर्मा**, देहरादून	निधनः 19–04–2021

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गॉव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है ।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2021-2023 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

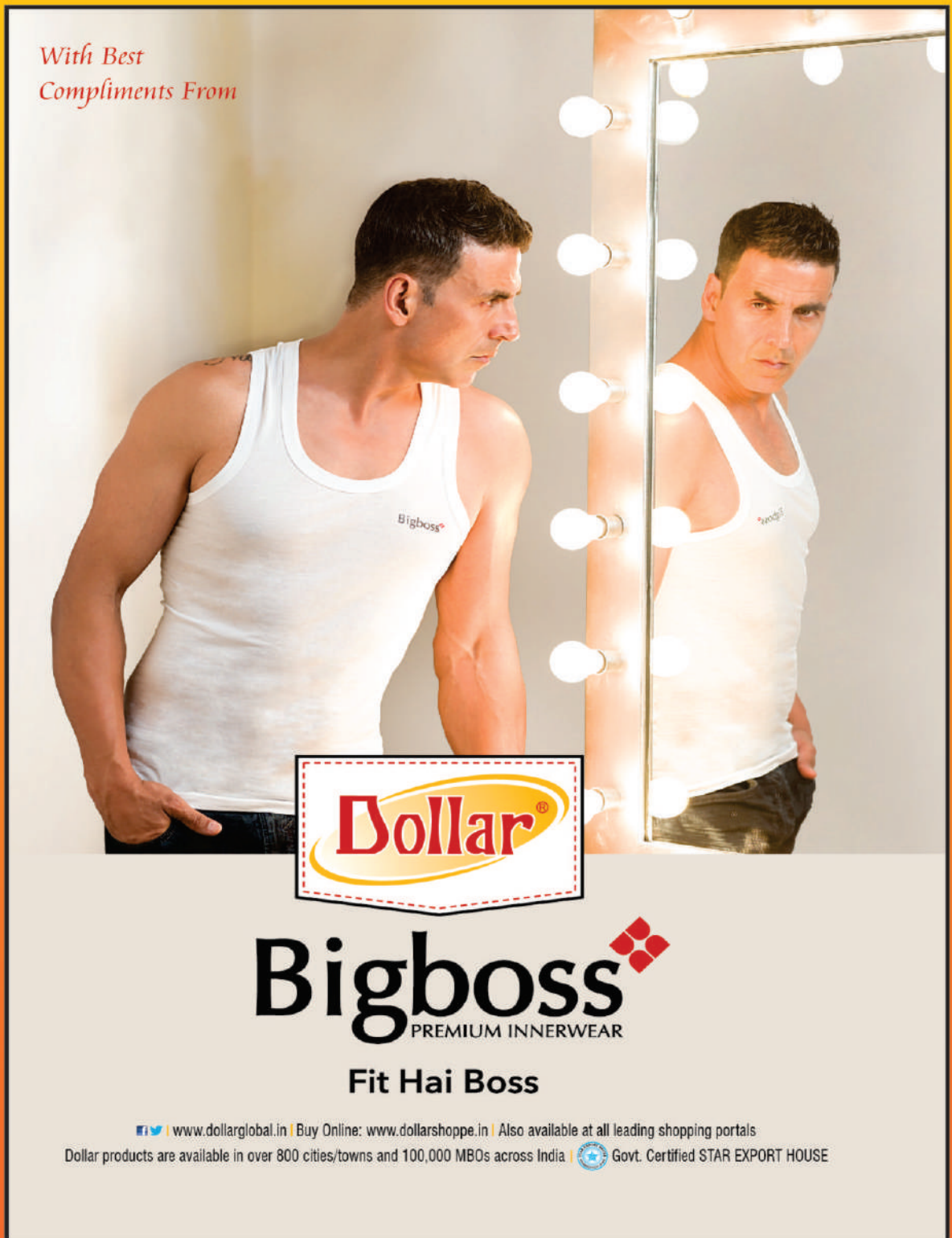

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com